



राधेश्याम त्रिपाठी

अग्रवाल पेपर हाउस

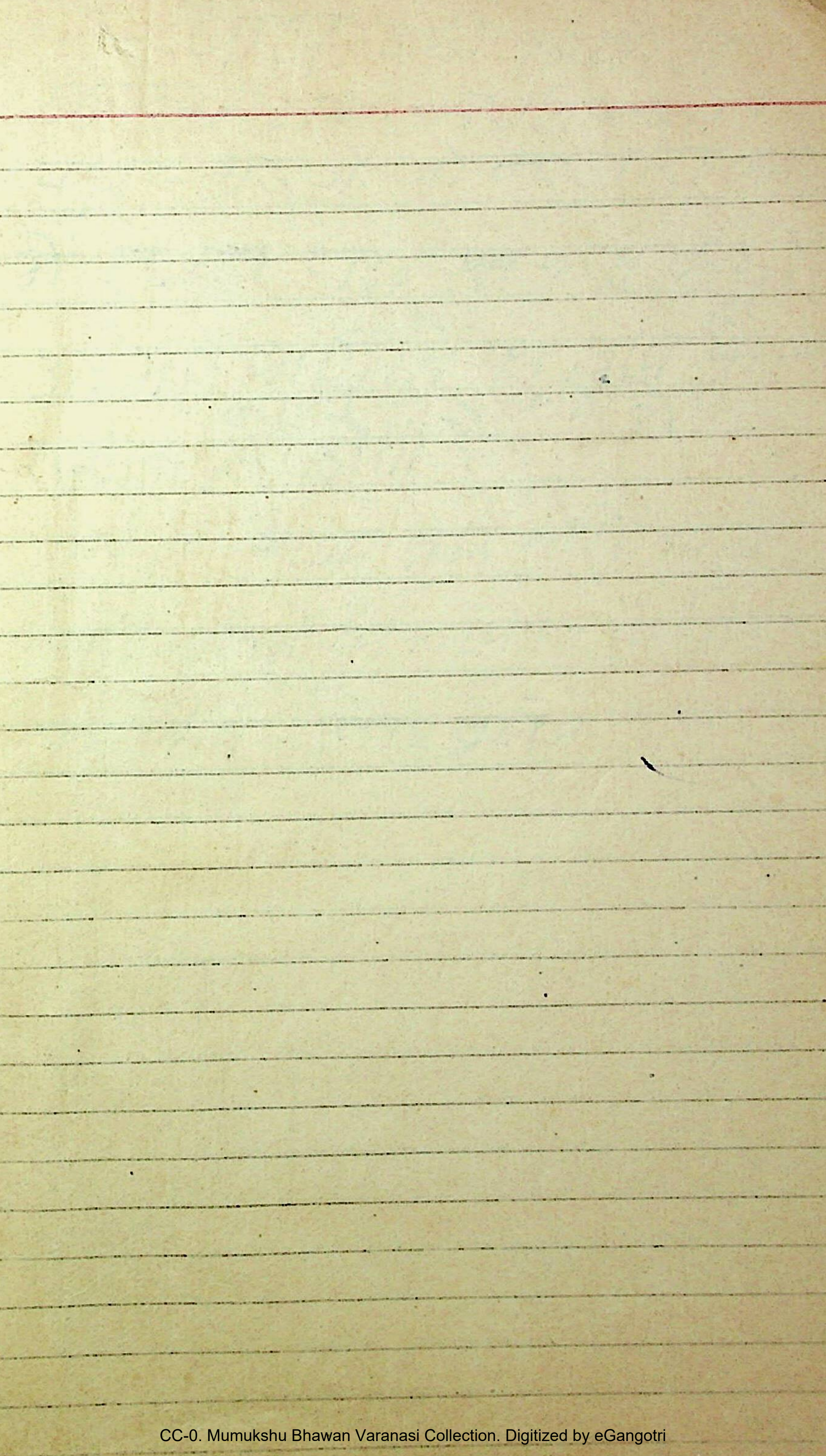
चौक, वाराणसी

पेज ७२ (कवर सहित) मूल्य-६/-

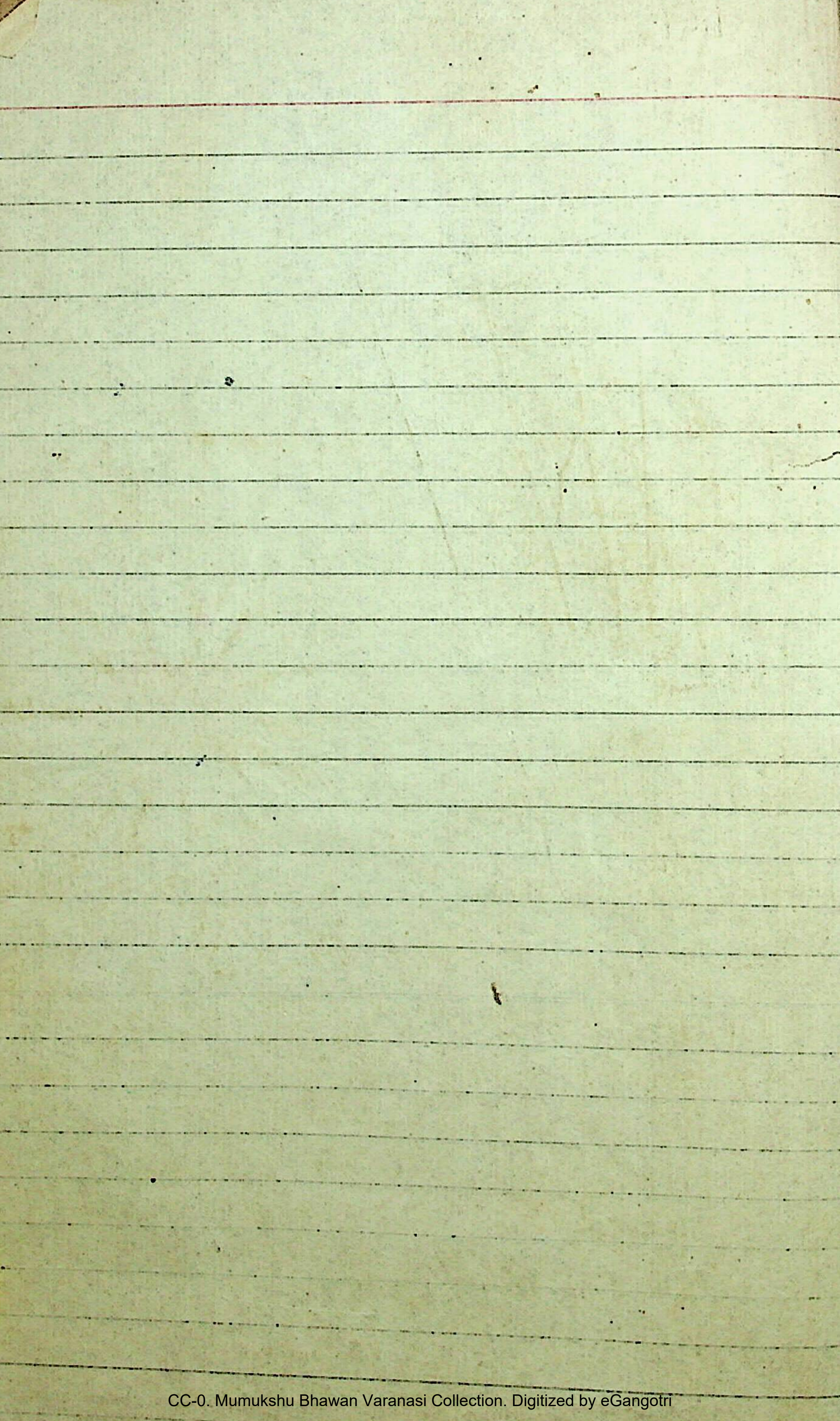
पेज १२० ,, मूल्य-१/-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कागौ डोंल रखना के
शेष है
२ काशी करपात्रीजी के हिन्दी
की पत्र और कागज
की पत्र संपूर्ण भारत में
पत्र का प्रचार।
३ पहिले शाबान भागी के
कारखाने [illegible]
४ कागौ ते [illegible] [illegible]
कवि कहते हैं उन और
५ गोवि वाला



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाप इसी कापी मे

आरपन धागा करा देखना है

प्रश्न – गुरु जी जो नर नारी काशी

में रहकर पाप कर्म करते है

उन महा पापियों का पाप कैसे
काशी कैसे

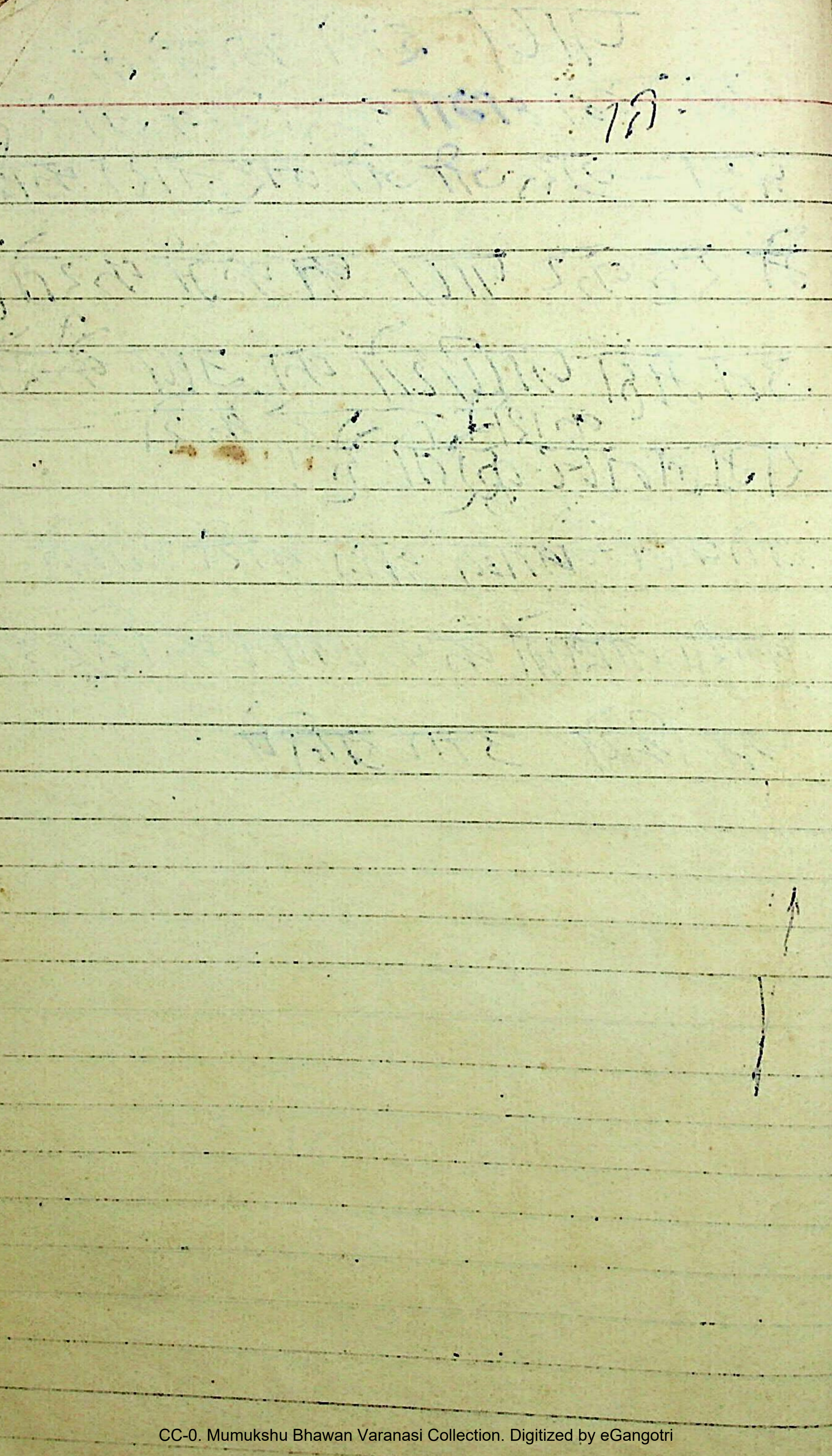
समूल नष्ट करती है!

गोपाल चैतन्य ब्रह्मचारी आपने

काशी वासियों के कल्याण के लिए उत्तम

प्रश्न किये उत्तर सुनिये –

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



काशी मे विश्वके महाराजा

1 (काशी विश्वनाथ जी) ~~साक्षात~~ है विश्व के भगवान है। ~~है काशीके~~

2 काल भैरव जी प्रधान मन्त्री है

3 काशी के ~~मुख्य मन्त्रि~~ राजपाल विरभद्र जी है

4 काशी के सेनापति दण्डपाणी जी है

काशी के ~~सैनाईड~~ सी आई डी पुलीस के अध्यक्ष सुभ्रमजी है ~~सेनाई के पुलीस~~

~~खुफिया~~ पुलीस के ~~काशी के थाना इन्चार्ज~~ ~~हैं जी~~ और चित्र गुप्त काशी

6 ~~निभ्रम~~ विभ्रम जी है जैसे प्रत्येक मनुष्यो के पाप और

पुण्य चित्रगुप्त ~~जी सब लिख~~ ~~ते है~~ स्वर्ग लोक मे रहते हुए

पृथ्वी के मनुष्यो के सब चोरी चारी दिन कोलिखते है लिखते है। उसी प्रकार काशी

मे बिभ्रम अध्यक्ष (योगा) प्रत्येक काशी

मे रहने वाले ~~काशी वासियों के दिन~~ ~~दाहिने~~ रूपे पाप और पुण्य सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्योंके सब कर्म लिखतेहैं
काशी मैं बिश्वनाथ आनंदभैरव
सिपाहीयों को जिस व्यक्तीयों
को पाप करते हुए दिखते हैं–
उस पापी को ऐसा समय तत्काल पापी
१ उसी समय उस पापीके
मन मे ~~घरमे आकरके~~
उच्चाटन करा करके
काशी ~~मेंके शीमे~~ से भी
२ निकाला देते है।
२ दूसरे पाप कर्म करनेवाले
व्यक्तीको घरमे पडोसीयों
से दुकान मे अब जह अशान्ती और उपद्रव किया
करके लात कोडा काशीके
सीमा से बाहर निकाल
देते है। जो ~~सच हैवन~~

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लड़ाई झगड़ा में घायल होते है उन मरणायियों को दवा कराने के नाम से प्रेरणा करके काशी से बाहर निकाल देते है और वर्तमान मे जो काशी हिन्दू विश्व विद्यालय बना है यह भी काशी मोक्ष भूमि से बाहर है और वर्तमान सरकार के पुलिस ~~लाल को~~ पाप कर्म करने वालों ~~व्यक्ति को वर्तमान सरकार के पुलिस~~ गिरफ्तार करके जेल भेज देती है, वह जेल भी काशी ~~के~~ बाहर' मोक्ष भूमी से बाहर है ~~मानो~~ [illegible] ~~में~~

~~होतेस करै~~ [illegible]

~~है~~ [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के प्रताप से भारत के प्रमुख काशी में
आकर रहते हैं और अनन्त जन्मों के भग
वान के भक्त है काशी में
आकर रहते हैं और भगवान की
उपासना और करते है और
धार्मिक कार्यों में भाग लेते है
और कथा काशी माहात्म्य कि कथा
श्रवण करते है। ऐसे भक्त
को शरीर से अचानक अनु
कोई पाप हो जाते है उन पर
भी ~~मेरे भाव का~~ भगवान
उन पापों को प्रायश्चित्त क
रने के लिए रोग दण्ड दो
उन पर भी परावश
किसी कारण वश कर
भी ओण दे
कुछ दिनों का भोग क भी है
~~बाहर जाना पड़ता है~~।

मेरे दिन
दर्शन
लिए
भी

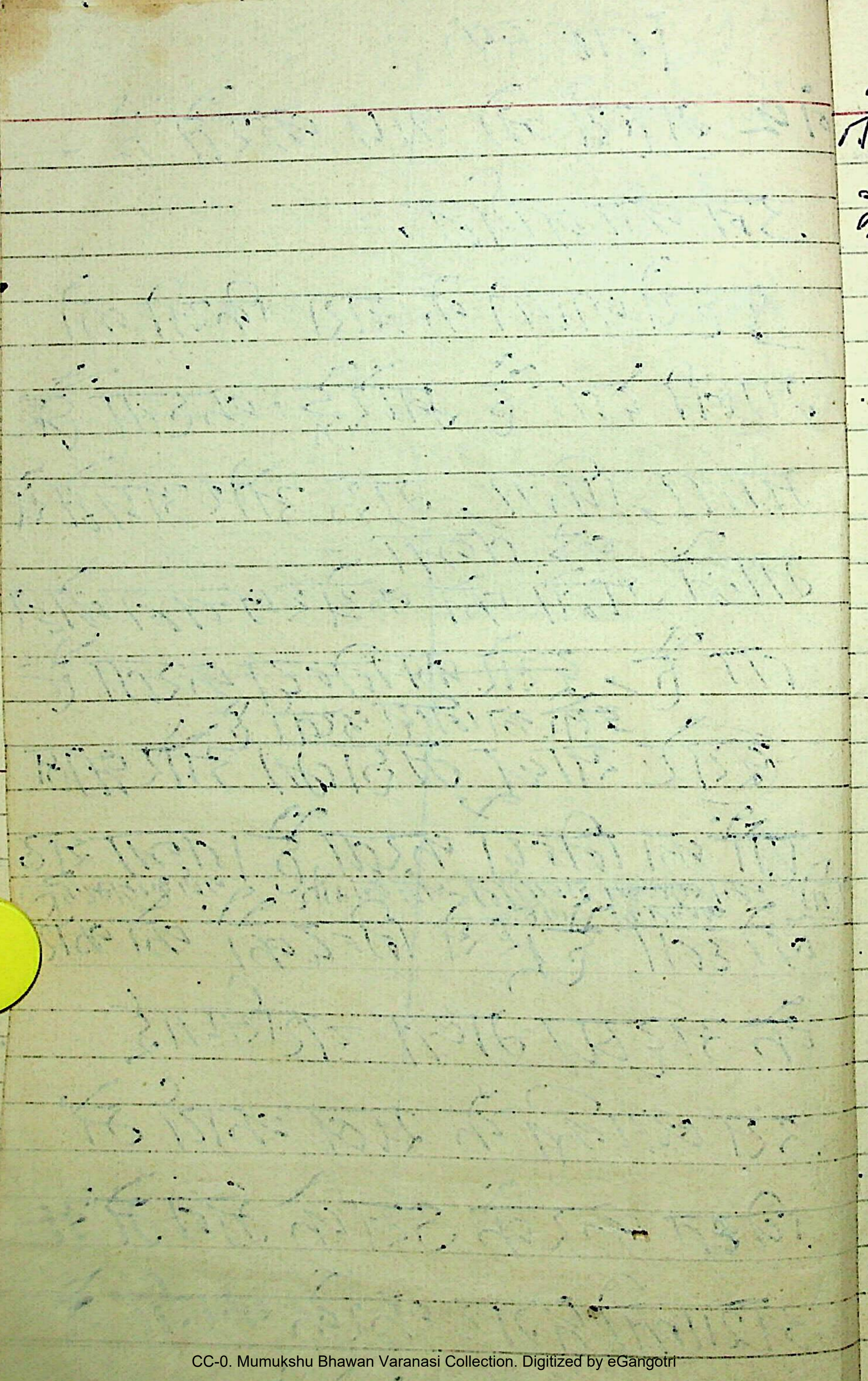
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(निंदक)

नं ५ मुंह से जो पाप करते है —
उन का वर्णन —

मुंह से वाणी के द्वारा किसी को
गाली देता है ~~मारेंगे कहता है~~
माता, पिता, गुरू और अपने से
बड़े तथा
माने जनों को कठोर वचन बोल्ह
ता है, ~~दूसरे का निन्दा करता है~~
दूसरे का निंदा करता है
~~दूसरे~~ साधु, महात्मा और ब्राह्म
णों का निन्दा करता है। तथा झूठ
मूता का खण्डन सनातन धर्म का और वर्ण आश्रम धर्म का खण्डन करता है
बोलता है। ऐसे निन्दकों को काशी
के अदृश्य गण चर सिपाई
उस व्यक्ती के सब कार्य मे
विघ्न कर के उस के मन मे अ
अशान्ती प्रगट करके काशी से
बाहर निकाल देते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घर और नगर नालियों में संसार के प्राणियों के जीवन जाते हैं
के स्थूल शरीर से दब कर (कीड़े मकोड़े-
मल) मच्छर, और चींटी आदि
दब कर मरते हैं, कई बार हाथ से
पैर से अचानक प्राणी अनजान
मे मरते है पाप कर्म होजाता है। उन पापों
के प्रायश्चित्त के लिये शंकर जी
काशी खण्ड और काशी रहस्य
में स्वयं कहते है। गङ्गा स्नान
मन्दिरों के दर्शन पूजन और
यथा शक्ती दान करके एक वर्ष
के अन्दर उद्यापन और दक्षिणा
पत देने के बाद में काशी की
पञ्च कोशी अन्तर्गृही
इत्यादि यात्रा निष्ठा से जो नर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और वर्तमान समय में छपी
छह पुस्तक काशी के नाम की हैं
काशी दर्शन १ काशी गौरव २ काशी की
प्राचीन कोशात्मक प्रणालिका ३
और वाराणसी वैभव नाम के पुस्तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारी - संकल्प होकर यात्रा स्वयं
करते हैं
करें और सबको प्रेरणा करके
काशी के सभी यात्रा कराते हैं
वह भक्त मेरे अनन्य भक्त
है तथा वही काशी में जीव
नमुक्त है। उस के पाप और
पुण्य सब भस्म कर देता हूँ।
जैसे चने के दाना भूजने से
अंकुर नहि उगता उसी
प्रकार काशी की यात्रा करने
वाले मनुष्यों के पापों का अंकुर
नहीं निकलता है। क्योंकि
सनातन, वैदिक। हिन्दू धर्म
को भावना हुआ और धर्म-
आत्मक का पालन करता हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

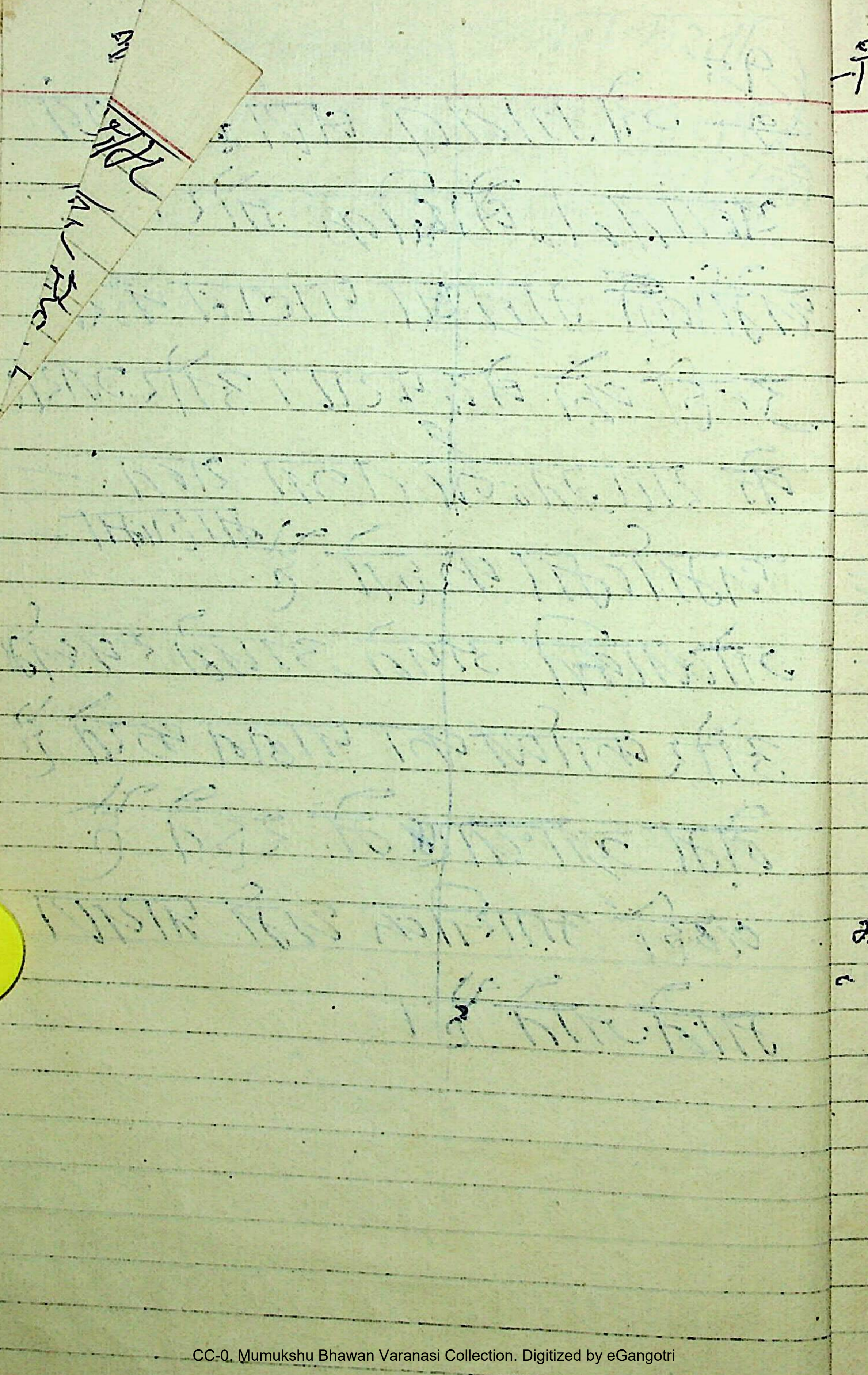
और सोधन में का पालन करता
हुआ कामि काम करते हैं
और और भाति दिन दान गंगा शब्दी
करते हैं। जो है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१०

जो मानव वर्ण आश्रम
सनातन, वैदिक और हिन्दू
धर्मों की मर्यादा पालन करते,
उन्हीं को वेद पुराण और भारत
के सत जनों तथा सन्त महात्मा
धर्मात्मा कहते है
ओ आस्थी अपने अपने स्वधर्म
और कर्तव्य का पालन करते है
नेम आचार में रहते है
वही आस्तिक धर्म प्रायण
माने जाते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१७ — काशी में महापापी और वह है

वह है जो खाली मन्दिरों को तोड़ता है मन्दिरों के मूर्ती उखाड़कर लेजाते है और फेकते है उन — महाँपापियों को जैसे वर्तमान सरकार के पुलिस और गुप्त पुलिस चर चोर और डाकुओं के पीछे लगते है और गिरफतार करके ही छोड़ते है उसी प्रकार काशी के अदृष्य सिपाही सिपाही मूर्ती उखाड़ ले जाते मन्दिर तोड़ते नहीं मारते — मारते को दण्डा ~~मारते~~ — ~~मारते~~ उस को ~~विशेष~~ और पागल मक देते है उठाकर पत्थर में पटकते है उठता है फेर गीरता है अपना उठता है उठाकर पटकते है ~~अब विशेष लोग~~

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह दृश्य देखकर

काशी के विद्वान और साधु

दिखाई

प्रत्यक्ष देखाई पड़ता है और

कोई मनुष्य दिखाई नहीं पड़ते

वह पापी चिल्लाता हुआ दौड़

दौड़ता है पीछे से डण्डा मार कर

लेहुए काशी के सीमा से बाहर

लेजाकर वह न मर सके सीमा

से बाहर निकाल देते है

काशी के सीमा से बाहर

जाकर उस महापापी की मृत्यु

होजाती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फाल्गुन शुक्ल द्वितीया के दिन सैया घाट प्रारम्भ हुआ

जनवरी २६ ४२ में

कानपुर के यज्ञ का वर्णन

सन - और मेवा - तिजोरी दर्शन

स्वामी करपात्रीजी महाराज ने कानपुर के सैया घाट मे गङ्गाजी के तट पर यज्ञ करने का निश्चय किये उसी से मैं या घाट पर बालु मे ~~शाम~~ दोपहर दोबजे से कथा प्रारम्भ हुआ दूसरे दिन सेठ - आकर स्वामी जी से बोला यज्ञ मे जितने (खर्च) रुपय होगे गा ~~आ~~ सब रुप या हम देंगे। स्वामी जी सबके सामने ~~पाँच~~ मिनट ध्यान लगा कर उस सेठ के चरित्र देखे ध्यान खुलते ही स्वामी जी बोले तुम चमडे के व्यापार करते हो और यज्ञ मे पैसा देने चाहते हो आज से यज्ञ मे सभा नहीं आने स्वामी जी ने ... सेठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाराज होकर बोला मैं कानपुर मे
पता करने नाही दूंगा कहते हुए
उठ कर चला गया । इस बैरदिन
प्रातः २ बजे सभा प्रारम्भ हुआ कथा
की पुरूषार्थ होने वाली थी उसी
समय जीहा धिकेश का पत्र
आया कानपुर के जिले के अन्दर
पता करना मना है स्वामीजी
को शिवप्रसाद चतुर्वेदी ने पत्र
पढ़ कर सुनाये हजारों के संख्या
मे बाल्य मे नर नारी बैठे हुए
थे पत्र सुनते ही स्वामीजी
उठकर खड़े हो गये और चल
पड़े
पतिगनों के पीछे लगे उसी
स्वामीजी के पीछे २
सभी हजारों नरनारी उठ कर
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

~~चेले~~

~~रवड़े हो गये।~~ स्वामी जी खड़ाऊ

पहिन कर गङ्गा जी के तरफ तेजी से

चले स्वामी जी के पिछे पिछे हज्जारों

नर, नरी दोड़े स्वामीजी खड़ाऊँ पहिन

कर पटा पट गङ्गा जी के उस

पार चले गये। ~~इधर जो गङ्गा गङ्गा~~

~~जीने सामने होकर रस्ता दियो स्वामी~~

जी का पैर जहां मे नहीं डूबा गङ्गा

जी के उपर पयर रखते हुए गङ्गा

उस पार चले गये उस समय शिव चैतन्य

ब्रह्मचारि जी सेवा मे रहते थे ब्रह्मचारि जीने

स्वामीजी का (आसन) मृग चर्म शरीर मे

बांद करके गङ्गाजी मे कूद गये गङ्गा तहर

करके स्वामी जी के पास पहुचे गङ्गा

तट के लिये बीच मे स्वामी जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चमत्कार

रुकडे मे स्वामीजी के पास पड़े थे ~~हैं~~

~~ब्रह्मचारी जी ने चार डाडु ले दंडवत्~~

~~करके र बालूमे गीर पडे उठते ही~~

~~सोचते मे स्वामीजी बोले बचू ऐसा~~

~~करते हो बड़ा होगा।~~ आसन यहाँ

पर बिछाओ ब्रह्मचारी जी ने मृग

चर्म बिछाये। स्वामीजी बोले जो भी

दर्शनार्थी आवे उन सब को पेहले

जल पान कराओ सामने देखो

कहा और मिठाई पो के डब्बों का

ढेर ही लगा है। उधर ~~स्वामीजी मठ~~

~~भीमे प्रवेश करते ही इधर~~ सभासे

स्वामीजी चलते ही हजारों नर-नारी

स्वामीजी के पीछे दौड़े ~~स्वामीजी~~

स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती जी गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पारगामुई।

जो से। खेड़ाउ, कठिन ~~वेर मलाओ है~~

इज्जारों ~~स्ति~~ प्रसन्न गङ्गा जी में
जो गाइकिने आगुले वे
~~बस्त हैं~~ ~~गाइ कूद~~ पड़ गङ्गा जी में
तैरकर स्वामी जी के पास
~~उनका को सेराक्षम उनका~~

~~निका इला देये पकंना दो~~ पहुंचे

जो गङ्गा किनारे खड़े थे ~~वे~~ सने-

शनै तेरा ~~मैसे~~ स्वामीजी के पास आये।

सभी ने मिष्टान्न ~~और फल~~
और दूध का भर पेट
जल पान किया। ~~उधर~~ उसी समय

गाँऊ के तरफ से इज्जारों नर,

दर्शनार्थ स्वतः आगये। उधर

पण्डा को रोकने वाले सेठ और (डीएम)

जिला धीसको जिस समय और मिनिस्टर

स्वामीजी ने गङ्गा जी में पधार रखे

उसी ~~प्रसंग~~ सेठ जिसको और जिला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घोस को लकवा नाम का भयं
कर रोग लगा.

~~मिश्राधमेश और~~ सेठ जिके पीता
जी स्वामीजी के सभामें छीप
कर बैठ हुए थे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वामी कृष्ण बोध आश्रम जी महाराज जी ने वेद ~~व्याख्या~~ करते हुए प्रवचन प्रारम्भ किये। उसी समय
अनन्तश्रीविभूषित धर्मसम्राट
स्वामी हरी हरानन्द सरस्वती जी महाराज ने हाथ उठाकर गरज कर
बोले अन्न पूर्णा जी अपने गण और सुद्धि सिद्धी को लेकर आगई है। पत्र का पेवस्था सब अन्न पूर्णा जी करेंगे। ~~आप~~ आप क्यूं चिन्ता करते हो यह सब्द सुनतेही १ मिनेट तक जो स्वामी जी के चेहरा पीले थे वह पागम्बर होगया स्प्रष्ट और लक्ष्मी के माला पीले थे वे साफ होगये। नहाट मे
चन्द्र ... थम्ब मे स्द। हीये वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह गिरफ्त होगया सीर मे

जल और गङ्गा जी का धारा ~~का~~
चल रहा था
सभी सतसङ्गीयो को दर्शन
हुआ दर्शन के पश्चात स्वामी
जी पोद्दे भक्तो पड़ा का पेवस्था
अन्न पूर्णा जी कर चुकी है।
स्वामी जी ने आसन के नीचे से
उठाकर मृग चर्म के नीचे से
एक कीस्तो का ईटा सोने के निकाल
कर बाहर फेका ~~देखा~~
सब देखकर वह दृश्य आश्चर्य होगये
स्वामी जी बोहो इसी सोने से पड़ा
करो ~~पड़ा करो~~ पड़ा से जो सोना,
रूपय, चांदि शेष बचे वह गङ्गा
जी मे छोड़ देना कहकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करपात्रीजी महाराज जी

प्रवचन करना प्रारम्भ किये।

उदर भक्तों को ईश्वर पर चाह

होगा
को उनका विचार करने लगे

जो भक्त आये और कोई भी हार नहीं गया

~~जागते रहे और बैठे हुए~~

उस दिन लगातार और प्रवचन करते हुए

दिन के 3 बज गया स्वामी जी

रात: 3 बजे

रोज तीन बजे से ब्रह्म मुहूर्त प्रारम्भ

आ होता है - ब्रह्म मुहूर्त में स्नान करके

भगवान का स्मरण करते हुए।

जो भी मनुष्य कार्य करता है

जप. पूजा और भक्तों का आवाहन
~~और पूजा~~ पाठ ~~पूजा~~ करते है।

उन के सब कार्य सिद्ध होते है

एवं मन्त्र जप तथा अनुष्ठा

न करते है उन के जन्म जन्मान्

तर के पाप नष्ट होते है + परलोक

मे सुख शान्ति और धन संपत्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की प्राप्ती होती है। अन्त मे
स्वर्ग लोक जाता है।
~~कल भूत मे प्रारम्भ होते ही~~
~~स्नान करने वाला व्यक्ति मृत्यु~~
~~के पश्चात सीधा स्वर्ग लोक मे~~
~~आता है। उत्तरी गोला से~~
~~...~~ सभी जो सभा से
उठकर स्नान करने चले गये
सभी भक्त लोग हर हर महा-
देव संभो काशी विश्वनाथ गंगे कीर्तन
करते हुए पीछे २ चले। जो घर से
आये हुए थे वह लौट कर पुनः
घर नही गये अनेकों नरनारी
आते लोग उधर उन्नाव जिला के
जिला चौरासी को स्वर्ग हुआ स्वामी
करपात्री जी महाराज कह रहे है स्वर्ग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मे यज्ञ रुक गई है प्रभु हनुमन्त

आओ आओ यह बात स्वप्न मे

सुनकर जागते ही जिज्ञासधीस

अपनी ~~स्त्री~~ पत्नि और गाड़ी को छोड़कर

प्रातः 8 बजे पहुचे। जीज्ञाधीस बोले

मेरे लिए क्या आज्ञा है, सुनते ही स्वामी

जी ने कहाँ यह यज्ञ तुम्हारा है सब प्र

बन्ध करो। जिज्ञाधीस बोले यह तो

मेरा सौभाग्य है। उसी समय हजारो

बैलगाड़ी ~~मे~~ यज्ञ के सामान

लाधे हुए आगये भेजने वाले

का नाम पता नहीं लगा। उसी

दिन देस विदेश से हजारो ब्राह्मण

पहुंच गये। अती रुद्र यज्ञ

लाखो [illegible] और [illegible] गयेदा

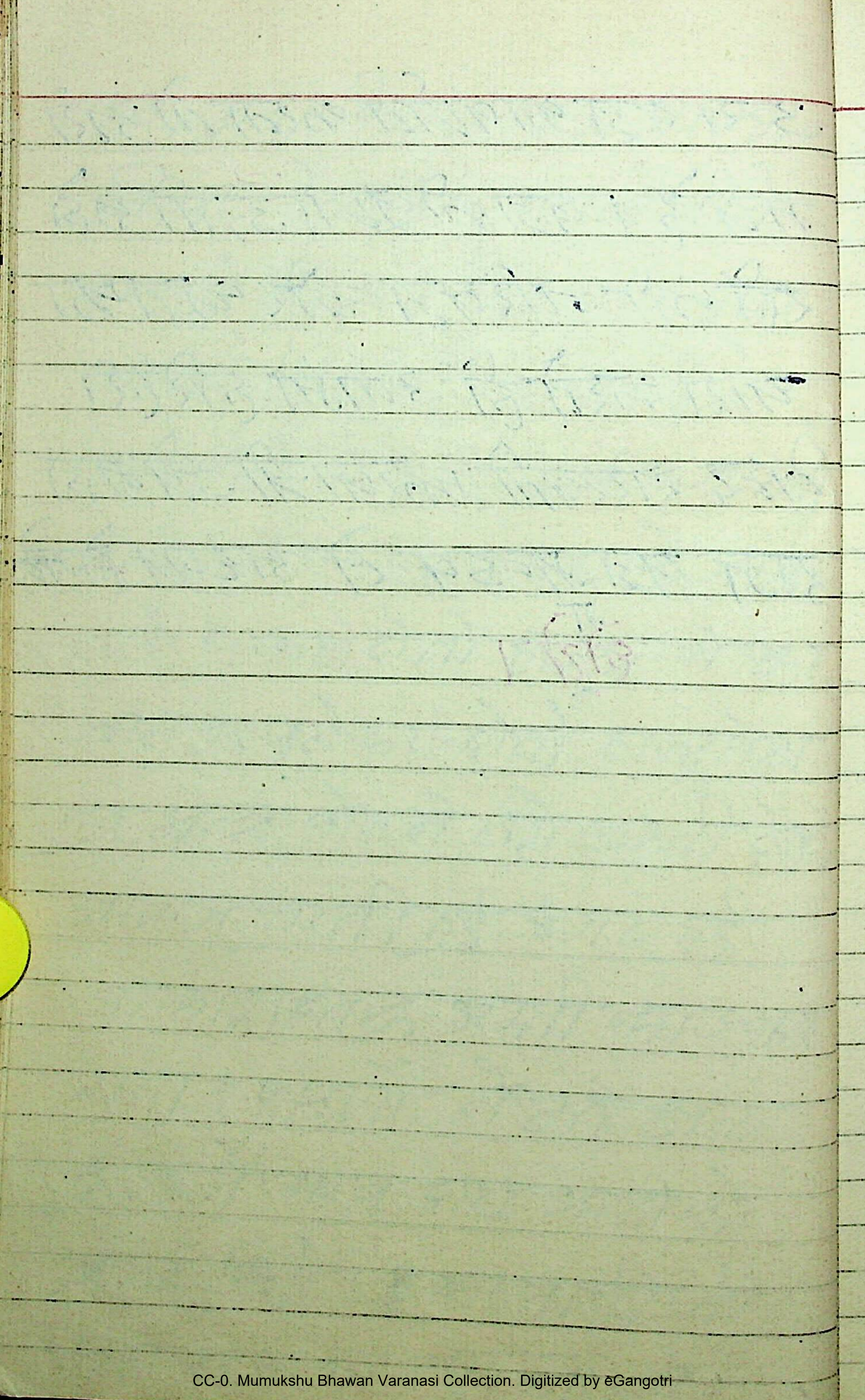
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यज्ञ, महाविष्णु यज्ञ प्रारम्भ
~~क्रिया~~ होगया । स्वामीजीने
ब्राह्मणों को कहा देवो मन्त्र द्वारा
अग्नी प्रगट करो ब्राह्मणोंने
स्वामी जीसे प्रार्थना किया । करपात्री
जीमहाराज यज्ञकुण्ड मे जाकर
खडे होकरके दोनो हाथ जोड़कर
नाद ब्रह्म लेकरके दोनो हाथ फैला
कर मन्त्र बोलने लगे अग्नी देवी
आवाज करती हुई प्रगट हुई
आकाश तक अग्नी का ज्वाला
गया । ब्राह्मणों ने भी अन्य
कुण्डमें मन्त्र द्वारा अग्नी को
प्रगट किये । करपात्री जी
महाराज का चमत्कार और

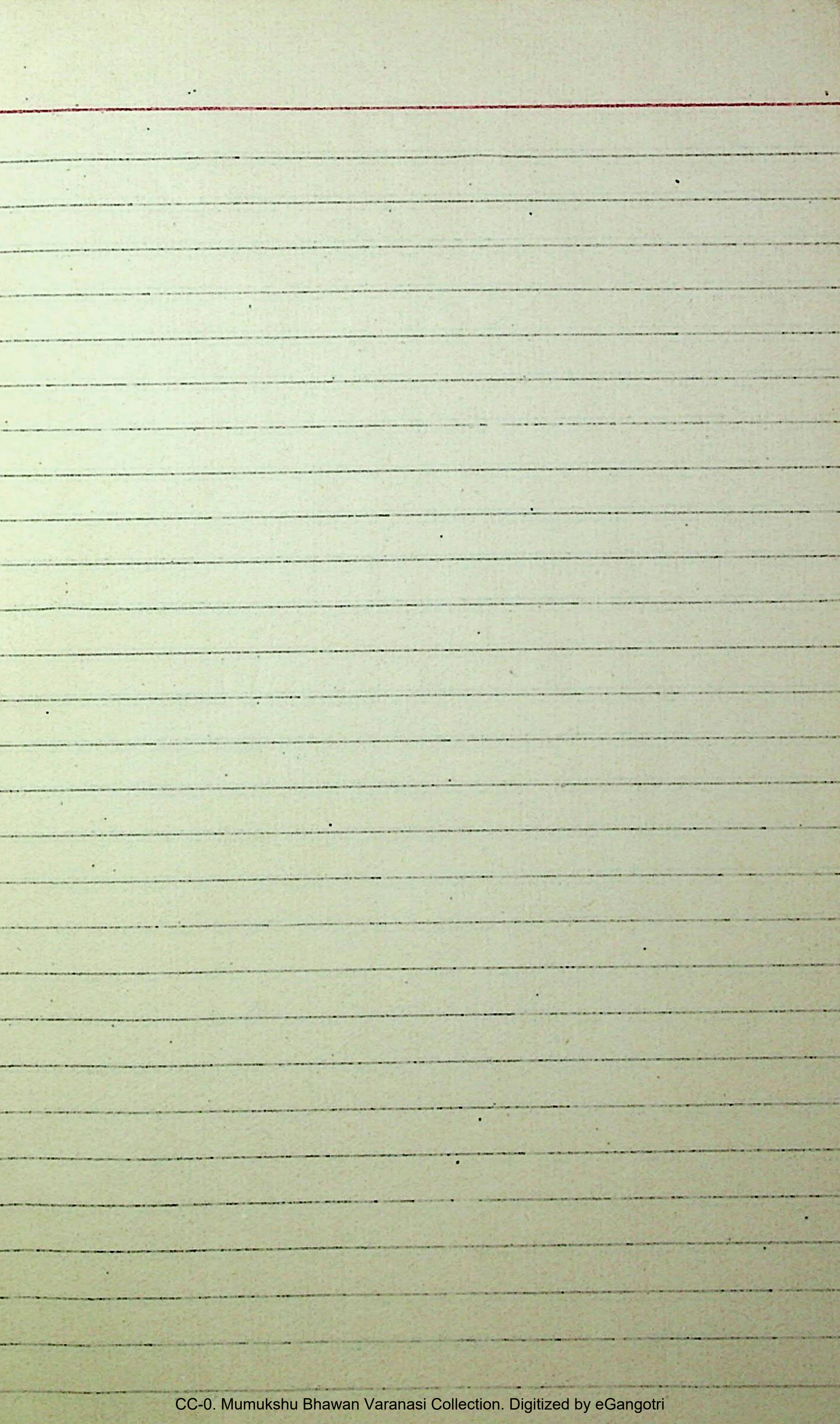
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस पट्ट का वर्णन करना तो असं
भव है। पट्ट की पूर्णाहुती बड़े
रहीं भी नारियल और घृत को
धारा करते हीं स्वामी हरिहरा
नन्द सरस्वती करपात्री जी महा
राज पट्ट मण्डप से अदृश्य ~~होगये~~
होगये।

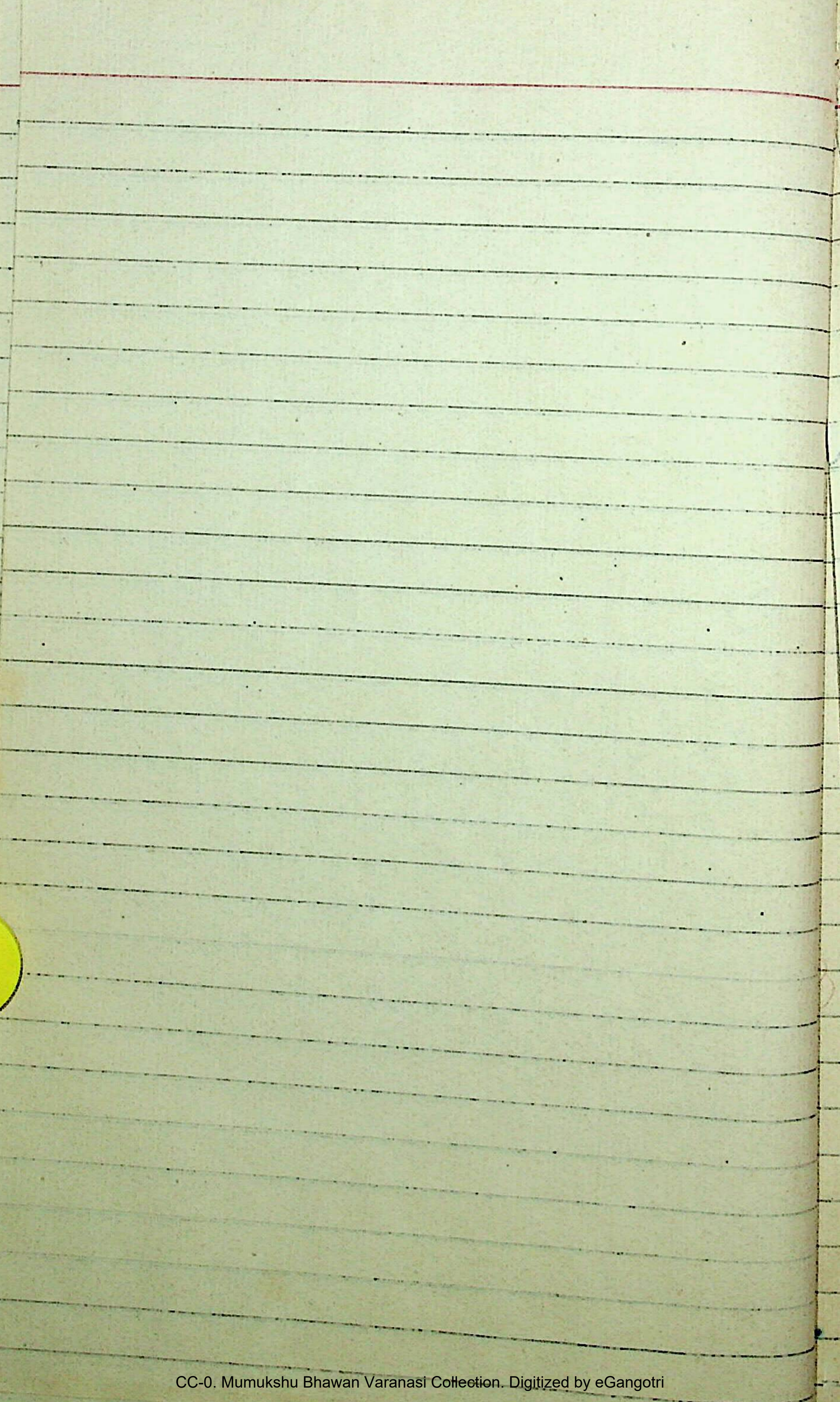
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी की अधिष्ठात्री देवी सत-

युग में सती देवी बनी

सत युग का उदय ओ निरवना है

त्रेतायुग युग के तीसरे चरण में

त्रेतयुग को उदय नीरवना है

काशी की अधिष्ठात्री ~~देवी~~

~~पार्वती~~ देवी हुई

द्वापर ~~युग~~ ~~में~~ ~~दूसरे~~ युग मे

भवानी काशी की अधिष्ठात्री

देवी भवानी है द्वापर युग को

उदय निरवना है

द्वापर युग के तीसरे चरण में

काशी की अधिष्ठात्री देवी

बिशालाक्षी बनी

कलि युग ~~को~~ में काशी की

अधिष्ठात्री देवी माता

माता अन्न पूर्णा देवी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घनश्याम जी से चारों
अंगों का ओ३ँ सीखना
है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ १ शिवानन्दसर स्वामी २

स्वामीजी सन १९-६० के

के कार्तिक शुक्ल अष्टमी तिथी

के दिन काशी विश्वनाथ अन्तर्गृह

प्रदक्षिणा यात्रा पूर्ण करके साधू

महात्मा

और ब्राह्मणों को जल पान करा

करके पुनः स्वामीजी २ बजे

मणिकर्णिका घाट मे गये मणि-

~~(मै भी साथ मे गया)~~ ह्रदय तक

कर्णिका घाट मे स्नान करके ह्रदय

(छाती) तक गङ्गाजी के जल मे

खडे होकर दोनो हाथ उठा कर

स्वामीजी ने जन्म जन्मान्तरों

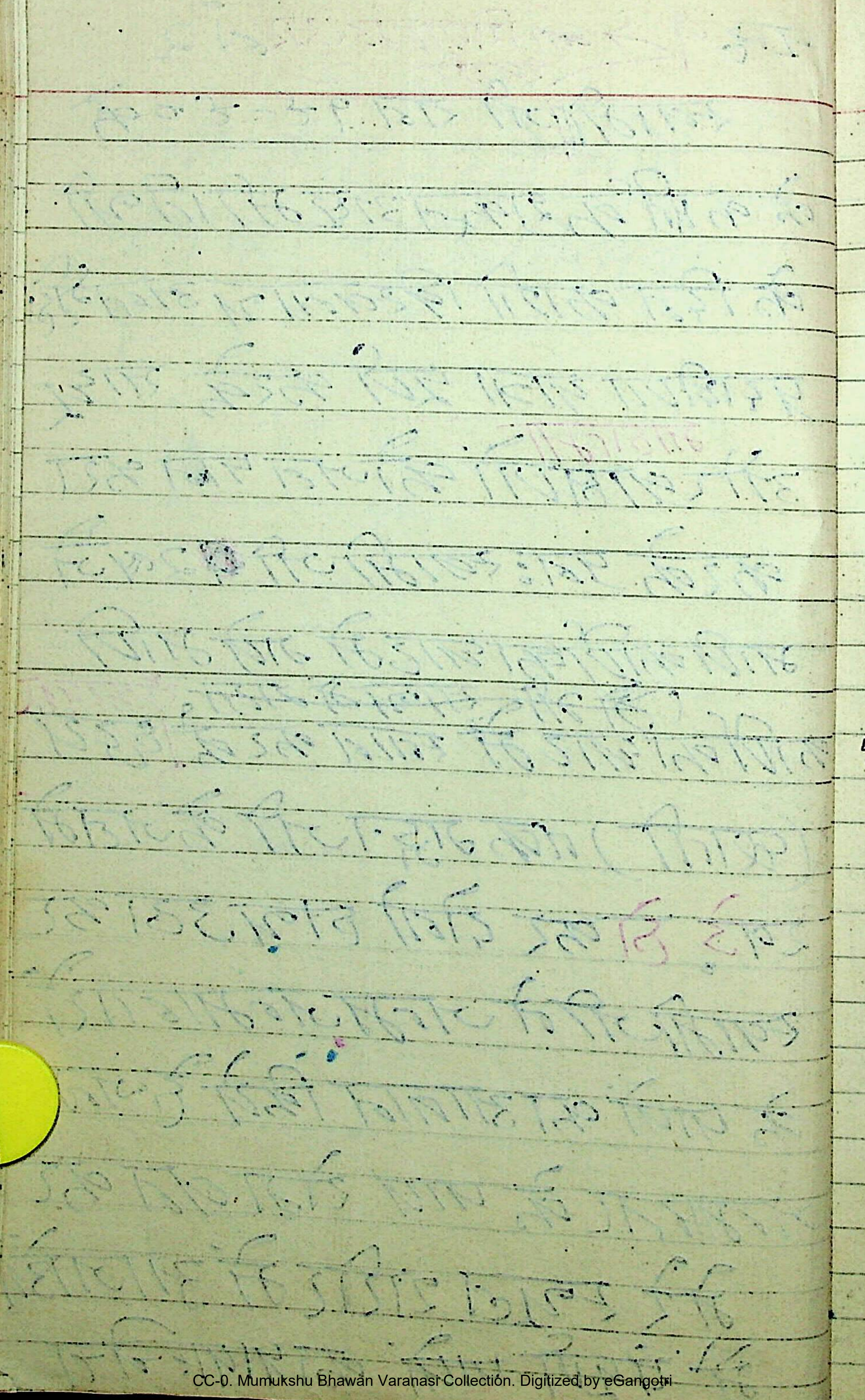
के पापों का आवाहन किये हे जन्म

जन्मान्तर के पाप रोग बन कर

मेरे स्थूल शरीर मे आजाओ

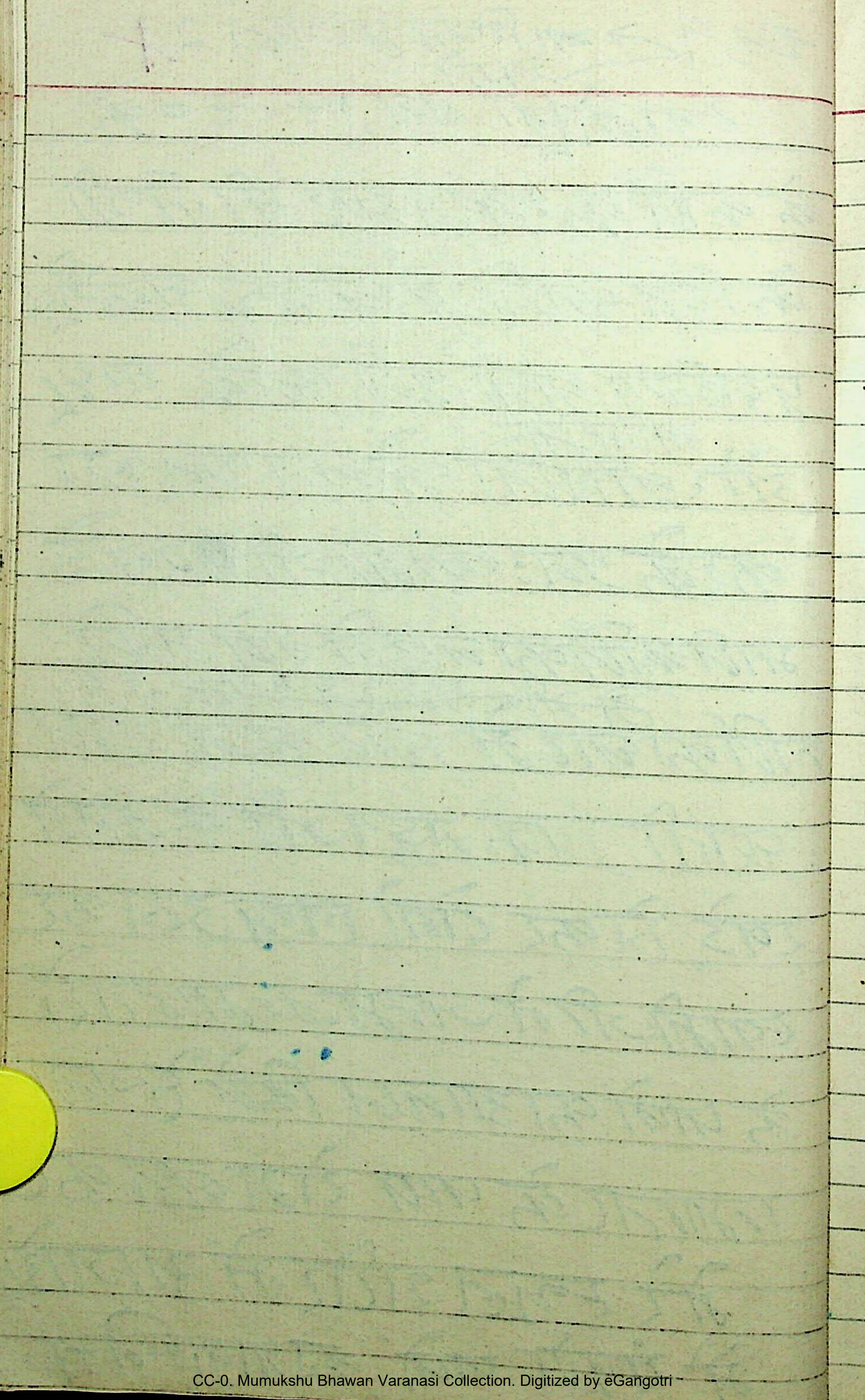
मै संपूर्ण पापों का प्रायश्चित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

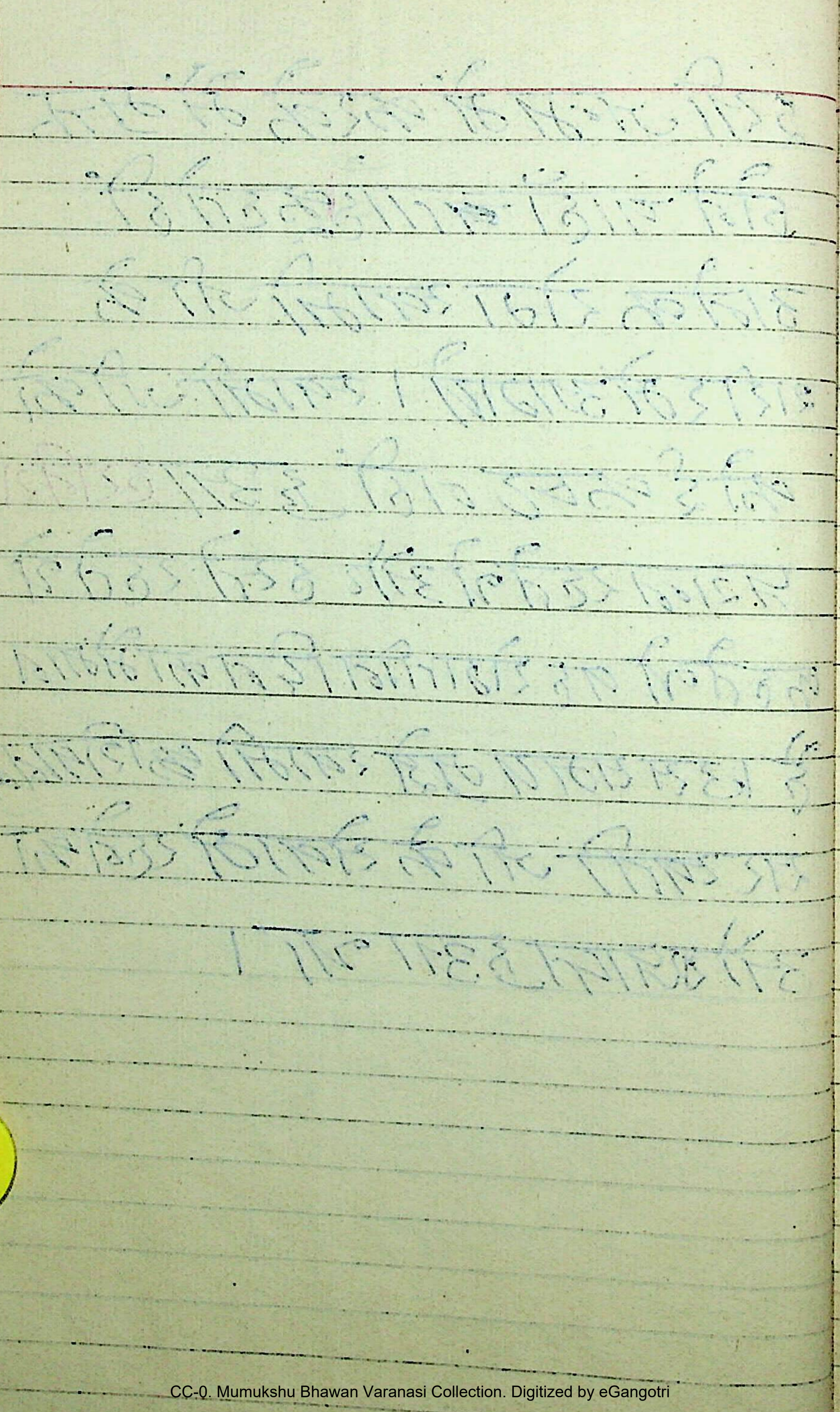
पृष्ठ १ वे का शिवानन्द सं० २॥
श्री
स्वामीजी सन १९-२० के
के कार्तिक शुक्ल अष्टमी तिथी
के दिन काशी विश्वनाथ अन्तर्गृही
प्रदक्षिणा यात्रा पूर्ण करके साधु
महात्मा
और ब्राह्मणों को अन्न पान करा
करके पुनः स्वामीजी २ बजे
मणिकर्णिका घाट मे गये मणि
~~मे गी गंगा मे गये~~
कर्णिका घाट मे स्नान करके दूदय
(छाती) तक गङ्गाजी के जल मे
खड़े होकर दोनों हाथ उठाकर
स्वामीजी ने जन्मजन्मान्तरों
के पापों का आवाहन किये है जन्म
जन्मान्तर के पाप रोग बन कर
मेरे स्थूल शरीर में आजाओ
मैं संपूर्ण पापों का प्रायश्चित्त
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी जन्म में करके मैं मुक्त होने चाहाँ बताहूँ कहते हैं अनेक रोग स्वामी जी के शरीर में आगये। स्वामी जी को कोई कष्ट नहीं हुआ हरनिश प्रसन्न रहते थे और हँसते रहते थे कहते थे यह रोग तीन दिन का मैंमान है। उस समय मुझे स्वामी कशिपानन्द सरस्वती जी के सेवा में रहने का औसर प्राप्त हुआ था।

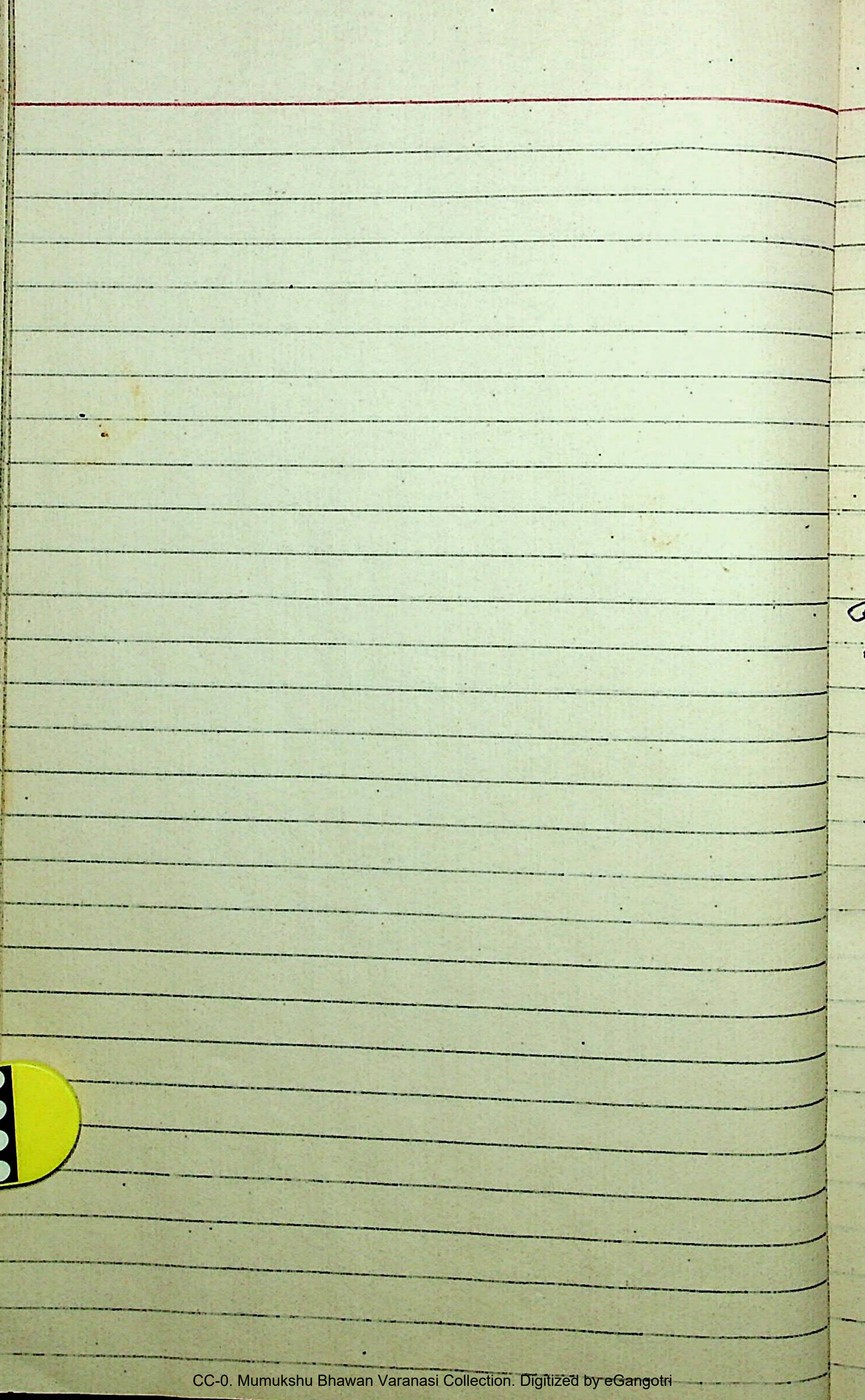
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी जन्म में करके मैं मुक्त होने चाहाँ बता हूँ कहते ही अनेक रोग स्वामी जी के शरीर मे आगये। स्वामी जी को कोई कष्ट नही हुआ हरनिश प्रसन्न रहते थे और हस्ते रहते थे कहते थे वह रोग तीन दिन का मैमान है। उस समय मुझे स्वामी करिपात्र स्वामी जी के सेवा मे रहने का औसर प्राप्त हुआ था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

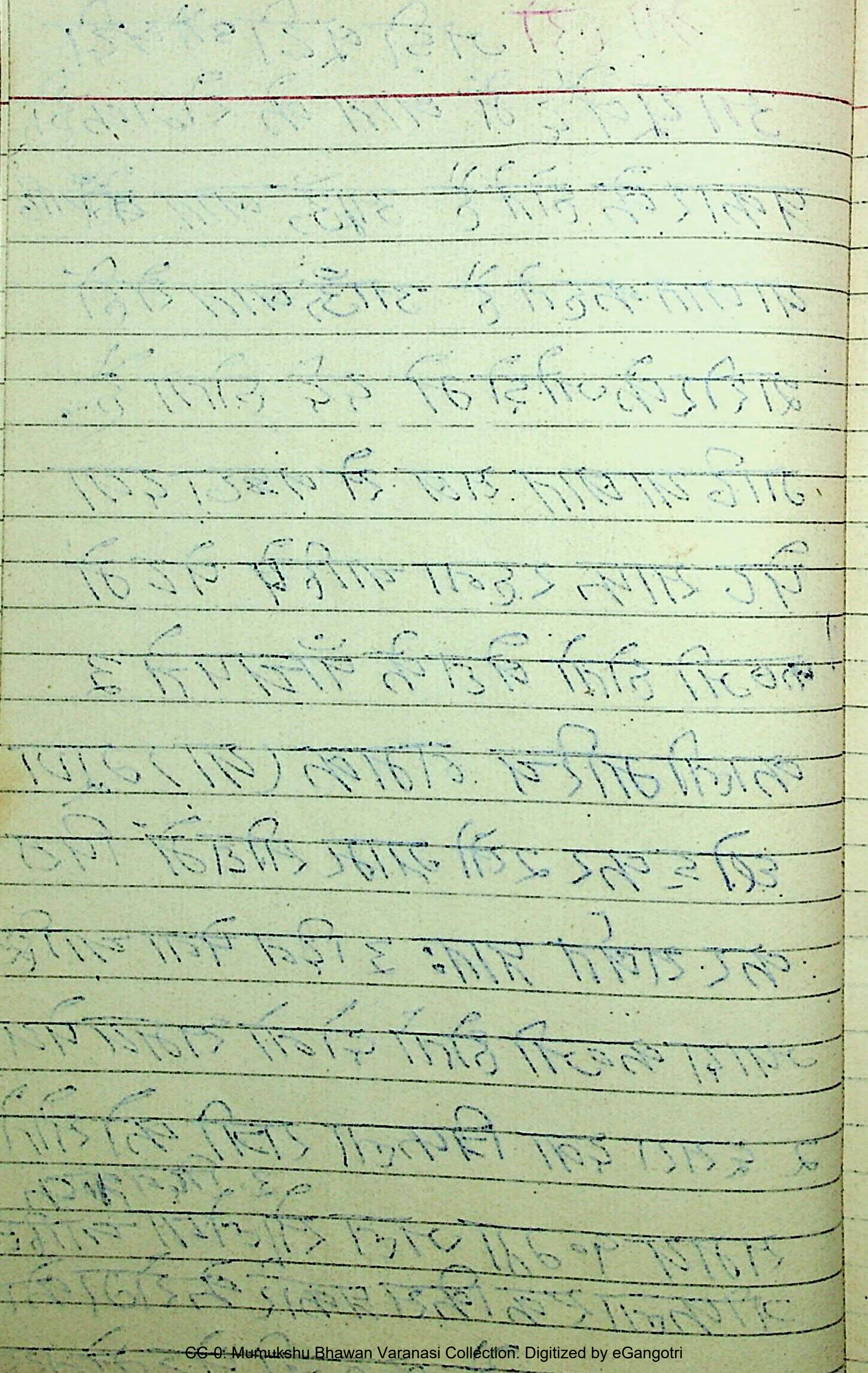
श्री हरी जड़ी बूटी औषदी

आयुर्वेद में बात के रोग कई प्रकार के होते है आऊ बात को गठिया बात कहते है आऊँ बात से ही शरीर के जोड़ो मे दर्द होता है. गठिया बात सब से बढ़िया दवा पेट साफ रहना चाहिये पेट में

1 कब्जी हो तो बेहा के पाँच पत्ते ३ काली मरीच नमक (या) गुण छोड़कर २सौ ग्राम सीत में पिस कर सर्बत प्रातः ३ दिन पेना चाहिए ज्यादा कब्जी हो तो दोनो समय पेय

२ दूसरा दवा त्रिफला रात्री को सोते समय १० ग्रा जल से ३ दिन लेना चाहिए त्रीफला एक किस प्रकार के रोग को नष्ट करता है कब्जी पेट में न रहने के प्रकृति ... दिन सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

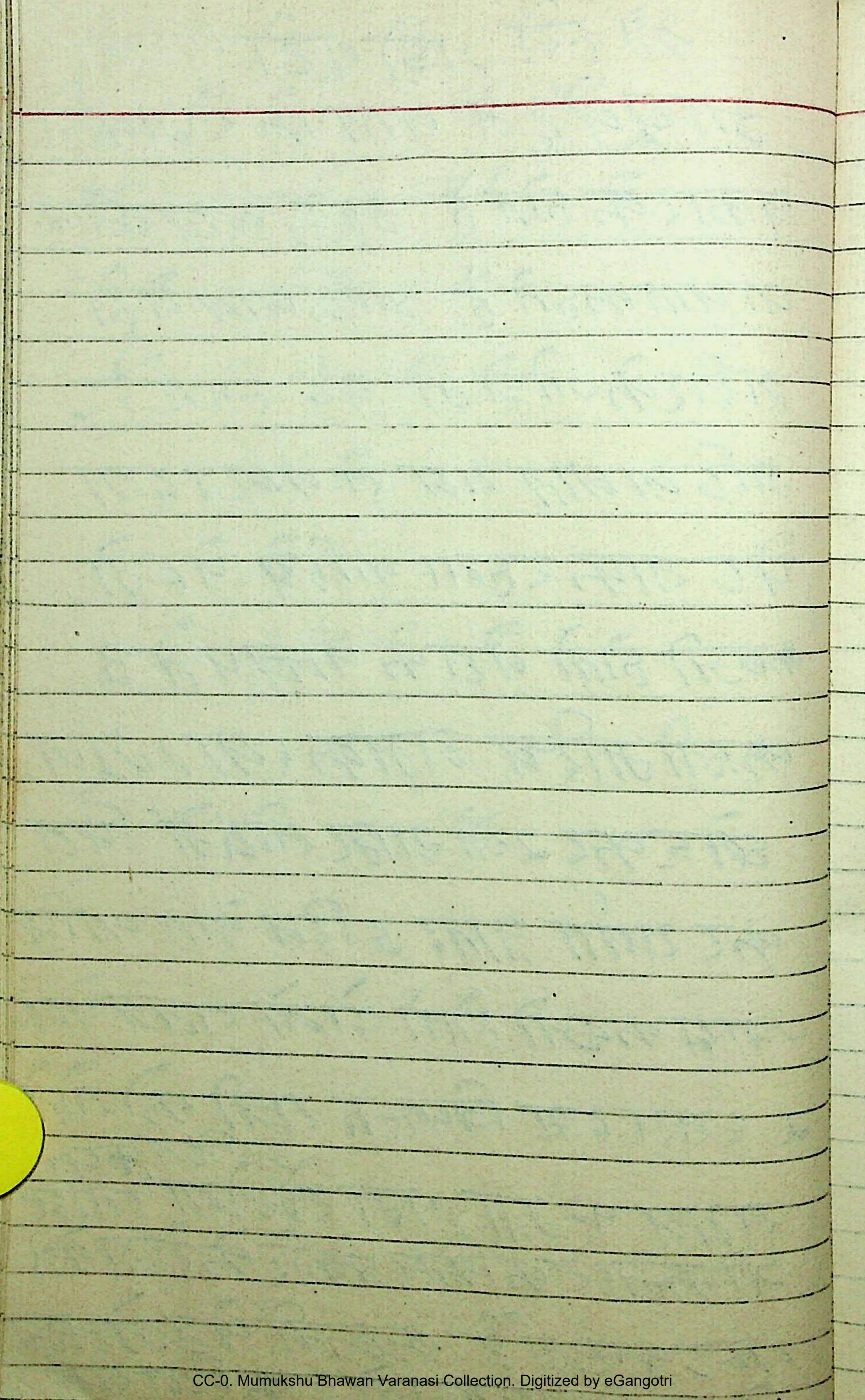
श्री हरी जड़ीबूटी

आयुर्वेद मे बात के रोग कई प्रकार के होते है आउ, बात के गाठ या बात कहते है आउ, बात से ही शरीर के जोड़ो मे दर्द होता है-

गाठ या बात सब से बड़ा दवा पेट साफ रहना चाहिये पेट मे कब्जी हो तो बेल के पाँच पत्ते 3 काली मरिच नमक (का) गूण छोड़कर 2सौ ग्राम सीत मे पिस कर सर्पत प्रातः 3 दिन पेना चाहिए ज्यादा कब्जी हो तो दोनो समय पेय

2 दूसरा दवा त्रिफला रात्री को सोते समय 10 ग्रा जल से 3 दिन तक लेना चाहिए त्रीफला एक किस प्रकार के रोग को नष्ट करता है कब्जी पेट मे न रह ने प्रकृति स्वभाव से एक दिन सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

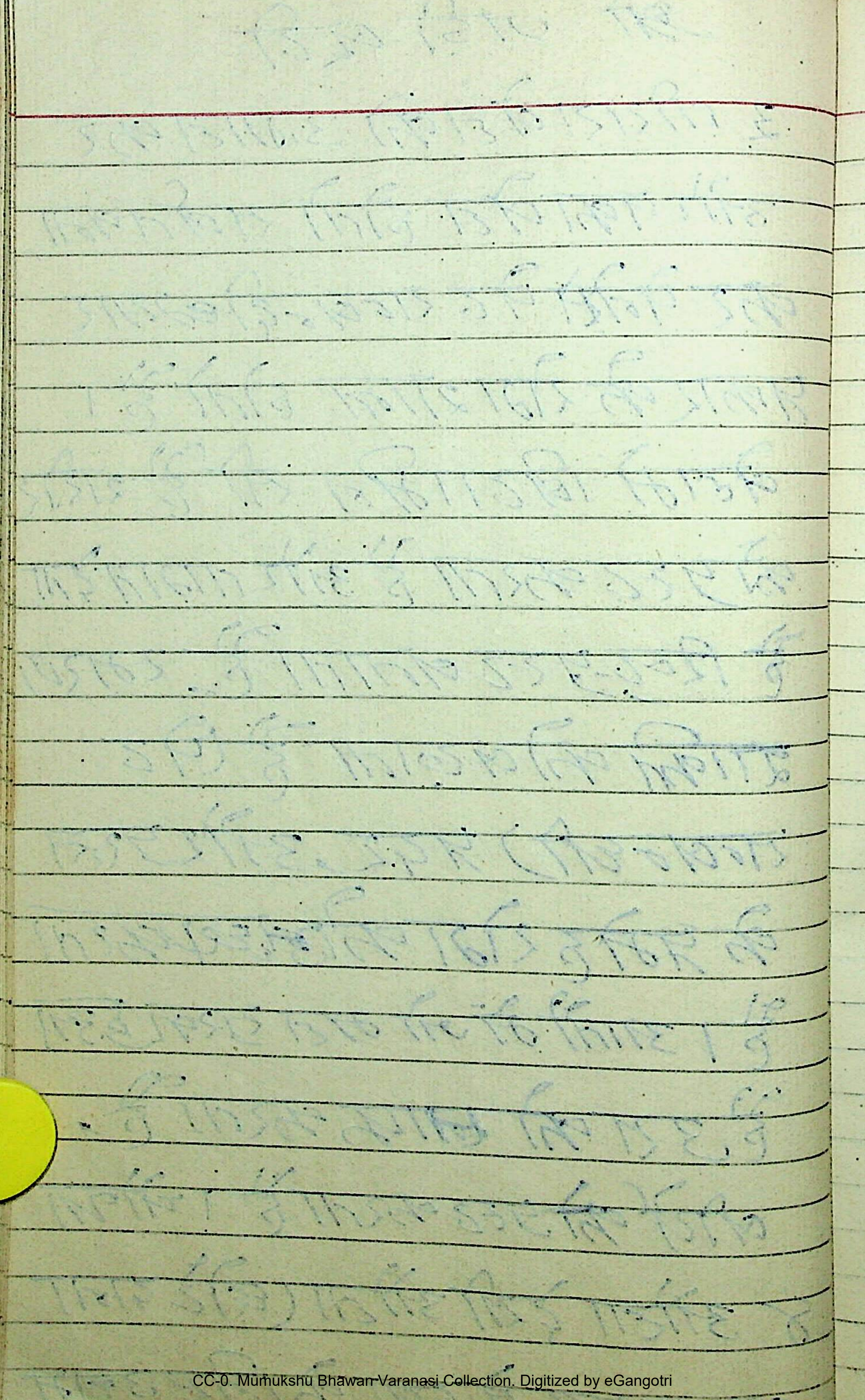


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

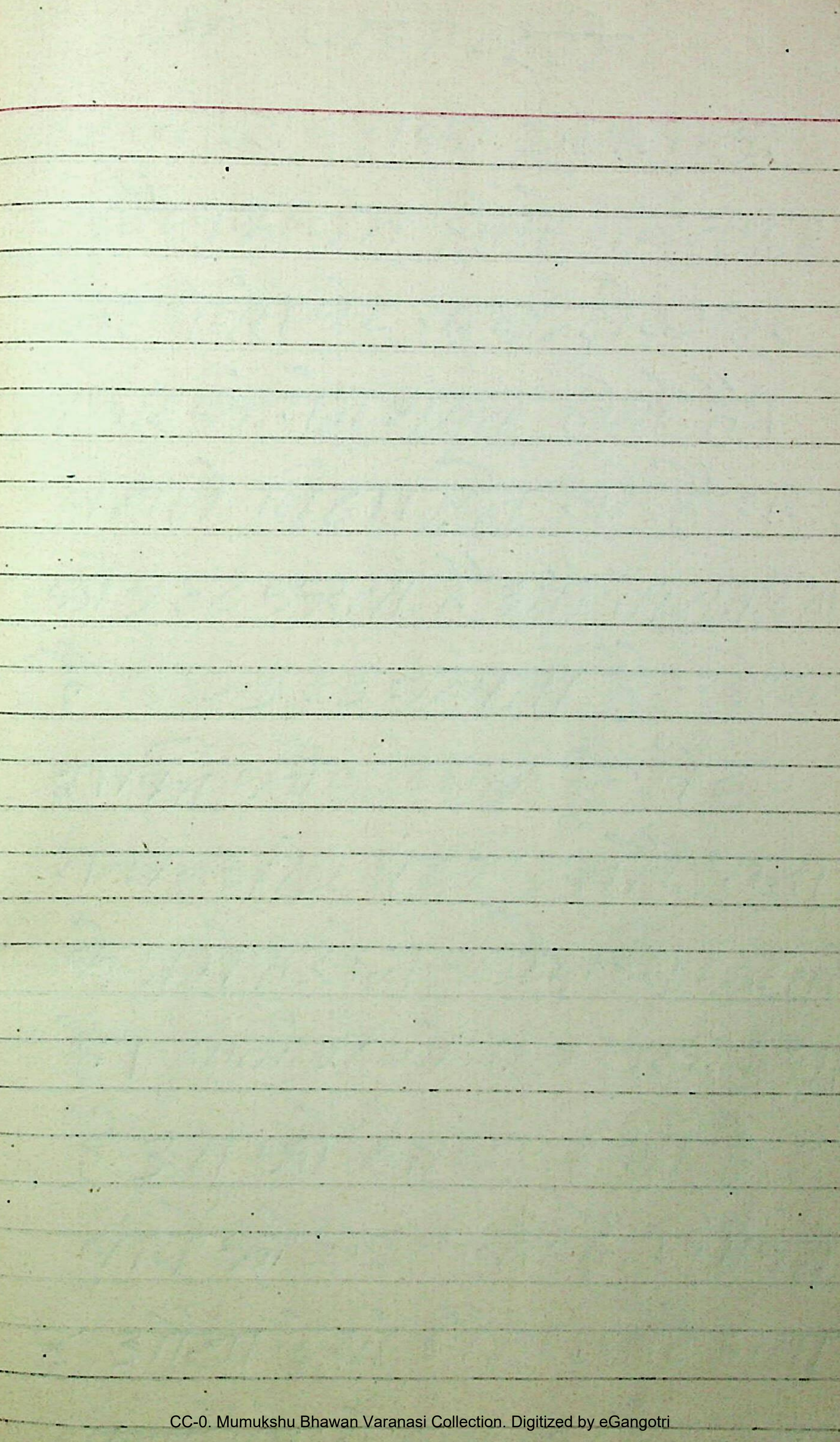
श्री जड़ी बूटी

3 तीसरा बेल को उबाल कर
और पका बेल हो तो सर्बत बना
कर पेने से पेट सम्बन्धी चार
प्रकार के रोग शान्त होते है।
बेल में बिटामिन सी है शरीर
को पुष्ट करता है और ताकत देता
है रिष्ट-पुष्ट बनाता है स्मरण
शक्ति को बढ़ाता है (पेट
सम्बन्धी) प्रदर, और पुरुष
के प्रमेह रोग को दूर करता
है। आतों में जो मल रुका हुआ
है उस को साफ करता है।
वीर्य को पुष्ट करता है। चौथा
4 औला देसी औला (छोटे दाना
वाला सब से दवा के लिए उत्तम

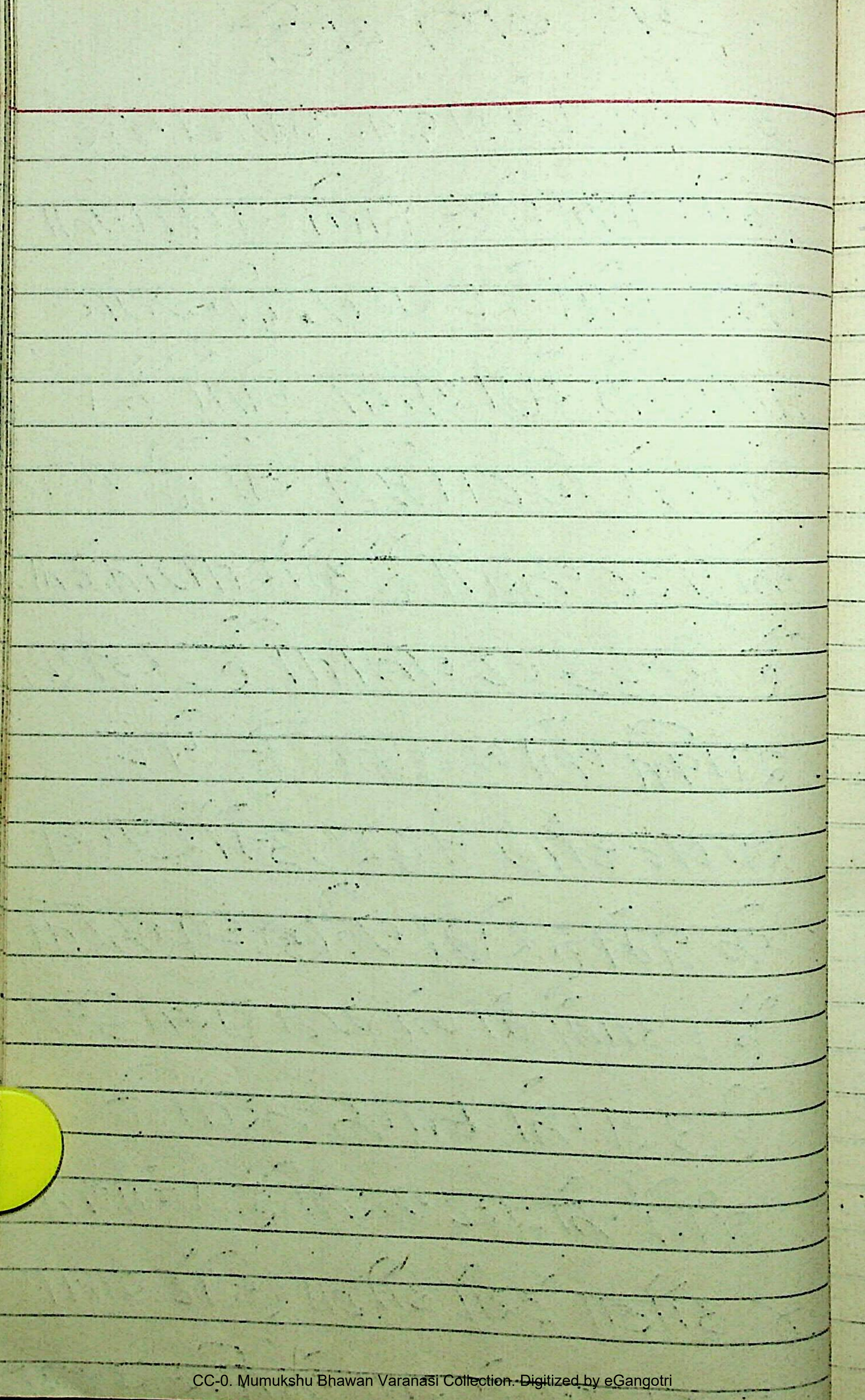
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

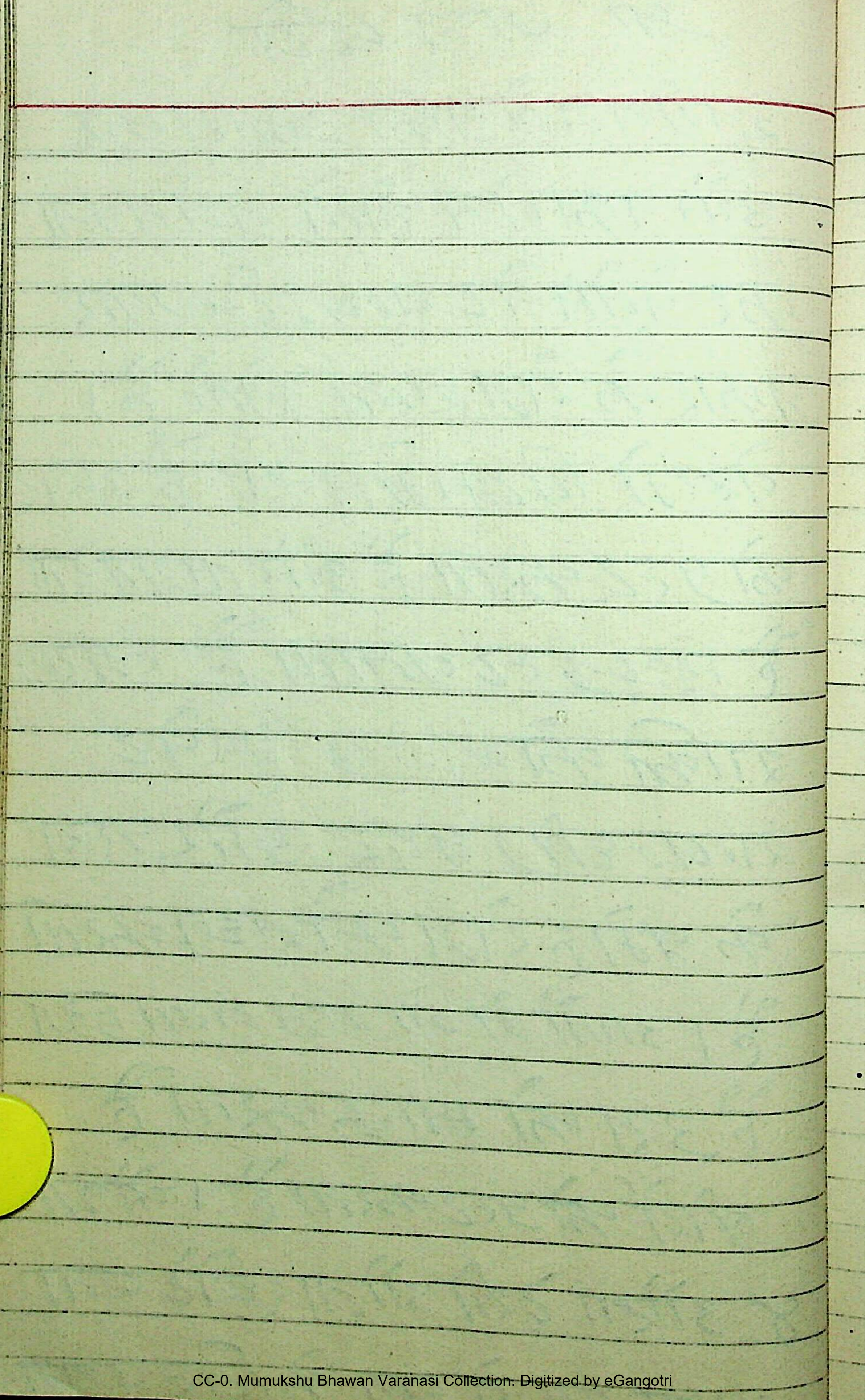


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री जड़ी बूटी

3 गिलोय बेल को अमृता कहे
और पकी होती होतो सेवन करना
करनेसे पेट सम्बन्धी सब
प्रकार के रोग शान्त होते है।
बेल मे विटामिन सी है शरीर
को पुष्ट करता है और ताकत देता
है सिन्ध-पुष्ट बनाता है स्मरण
शक्ति को बढाता है पेट
सम्बन्धी प्रदर और जलन
के प्रमेह रोग को नष्ट करता
है। आंतो मे जो मल इकट्ठा
है उस को साफ करता है
वीर्य को पुष्ट करता है। चौथा
4 आंवला देसी आंवला छोटे दाना
वाला [illegible] से [illegible] के लिए उत्तम

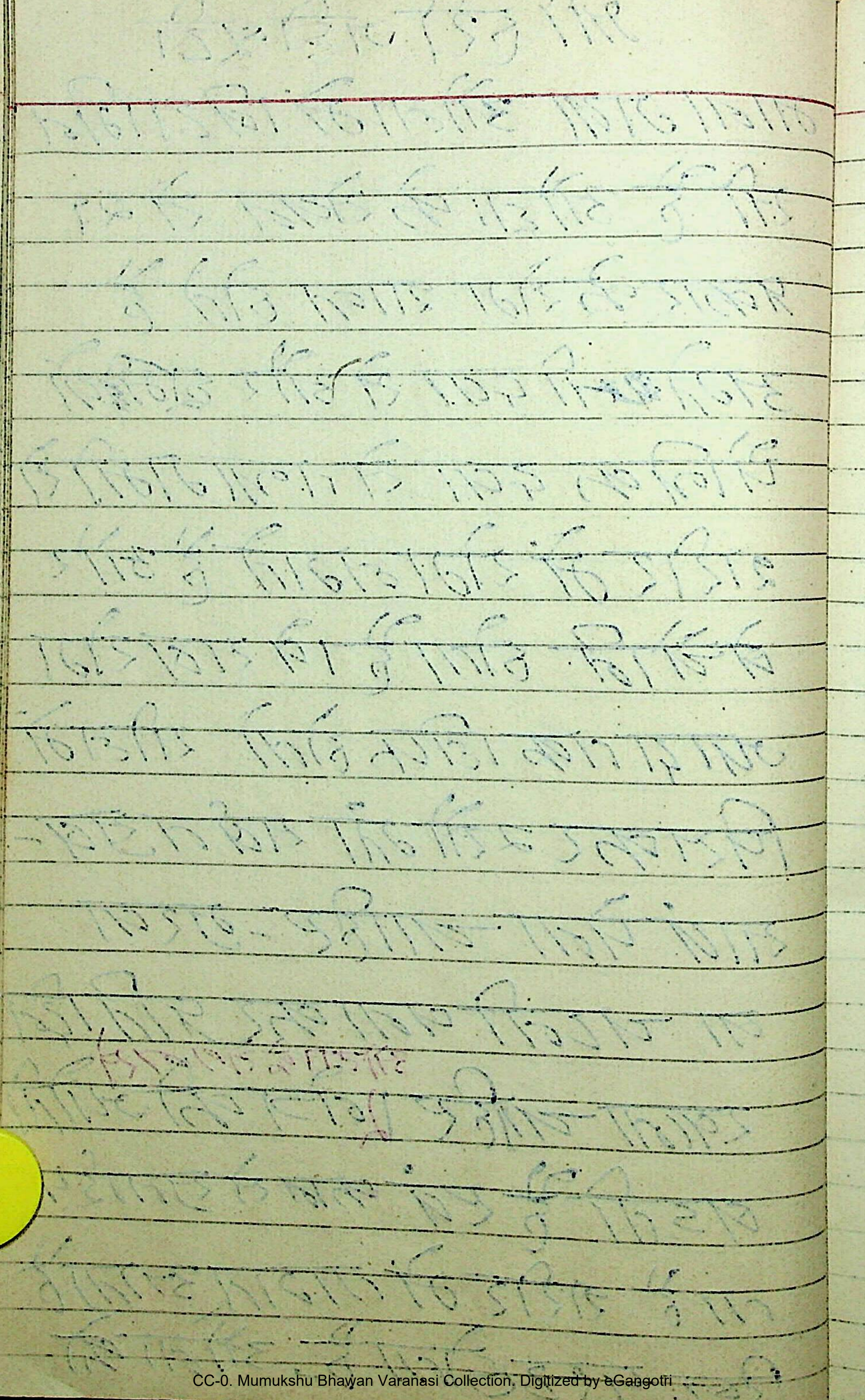
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री हरी जड़ीबूटी

माना गया औंला में विटामिन सी है औंला के सेवन से २१ प्रकार के रोग शान्त होते है अंग्रेजी दवा से और हुमियो पैथिक दवा से तथा गर्मी से शरीर में रोग लगते है और बेचैनी होता है। पे सब रोग ज्यादा तक ठीक होते सीत में पिसकर २ सौ ग्रां सर्बत सुबह-साम पेना चाहिए - मुरबा या चटनी बना कर प्रतिदिन खाना चाहिए। औंला के सेवन से नैन की ज्योती बढ़ती है एवं कान से सुनाई पढ़ना है शरीर में ताकत आता है रिष्ट पुष्ट होता है- औंला को

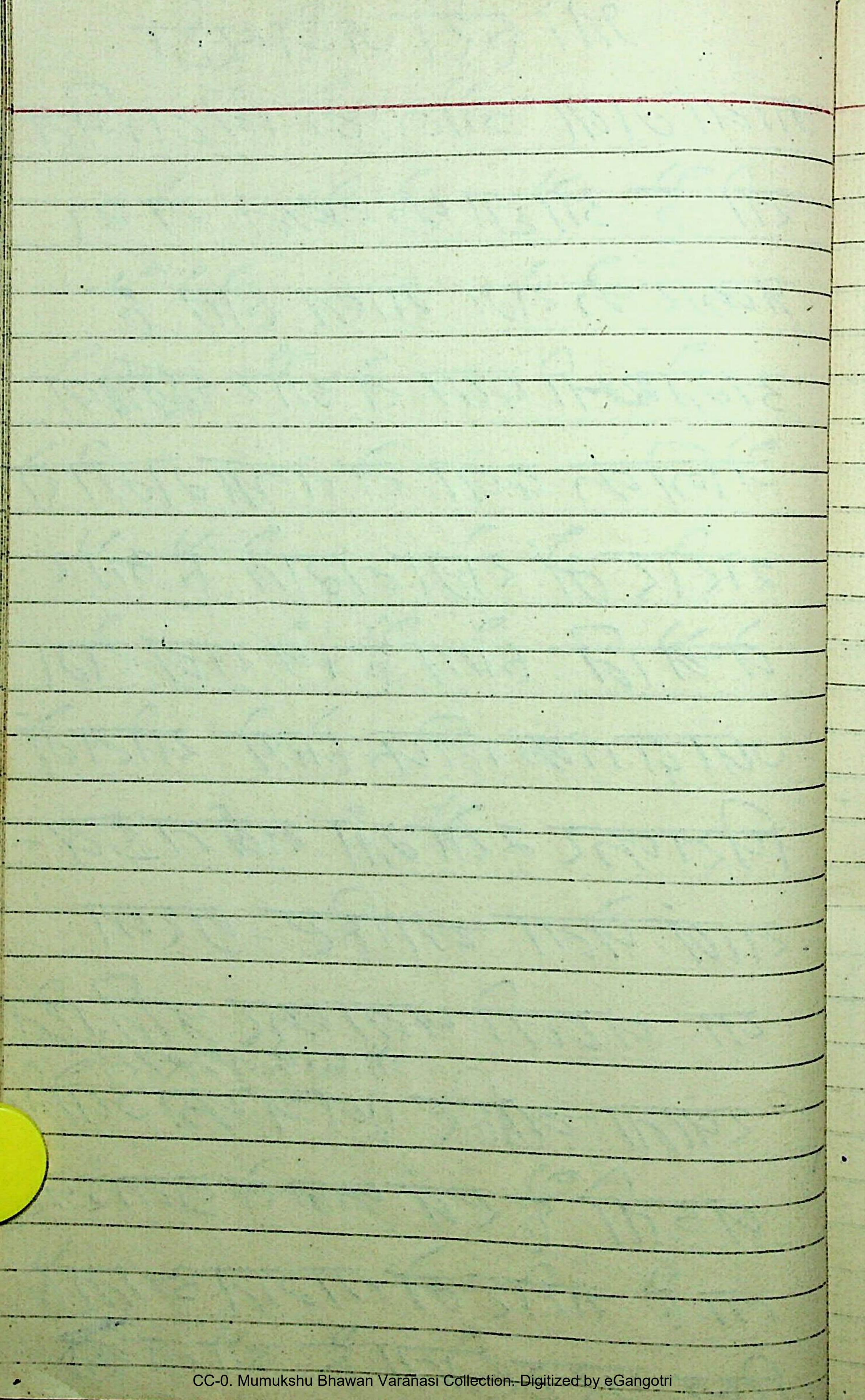


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री हरी जड़ीबूटी

माना गया ऑवला में विटामिन सी है ऑवला के सेवन से २१ प्रकार के रोग शान्त होते है अंग्रेजी दवा से और हुमियो पैथिक दवा से तथा गर्मी से शरीर में रोग लगते है और बेचैनी होती है। ये सब रोग ज्यादा तक ठीक होते रात में पिसकर २ सौ ग्राम सर्बत बनवा सामं पेता चाहिए - मुरब्बा या चटनी बना कर प्रति दिन खाना चाहिए ऑवला के सेवन से नेत्र की ज्योति बढ़ती है एवं कान से सुनाई पड़ता है शरीर में ताकत आती है रिष्ट पुष्ट होता है- ऑवला की

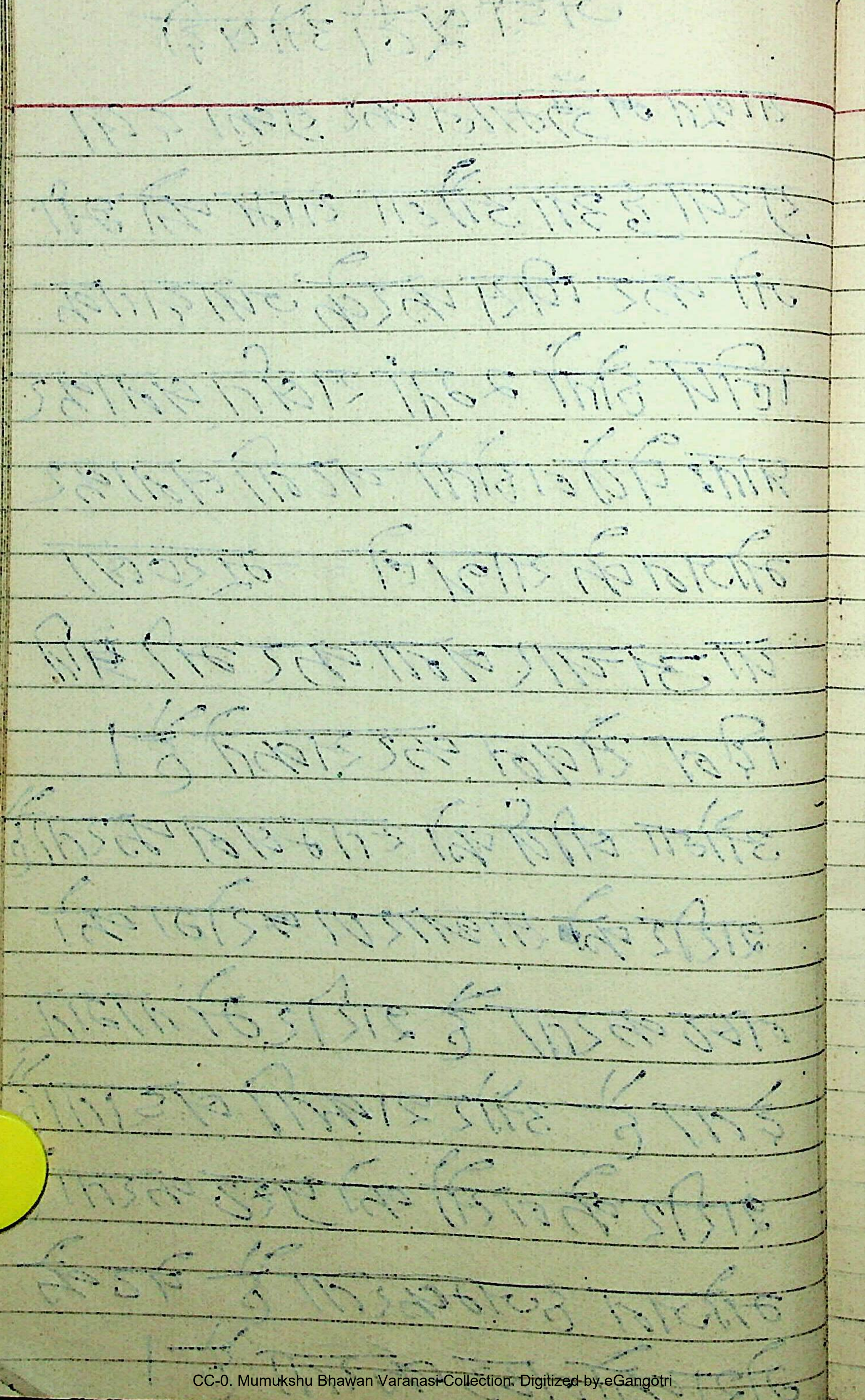
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जड़ी बूटी औषधी

साबूत में अॅमान कर सुका देवा सुखा हुआ औंहाा साम को भी भो कर पीस करके ज्यादा तक लेप हो तो रगतां सर्बत बनाकर प्रातः पेयें ना हो तो चटनी बनाकर भोजन के साथ ले - मुरब्बा या अचार बना कर भी प्रति दीन सेवन कर सकते है।
औंहाा बीर्य को स्तम्बन करता है शरीर के साधारण रोग को नष्ट करता है शरीर में तागत देता है और शक्ती बढ़ाता है शरीर के नसों को प्रुष्ट करता है भोजन हजम करता है पेट के गेश को नष्ट करता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



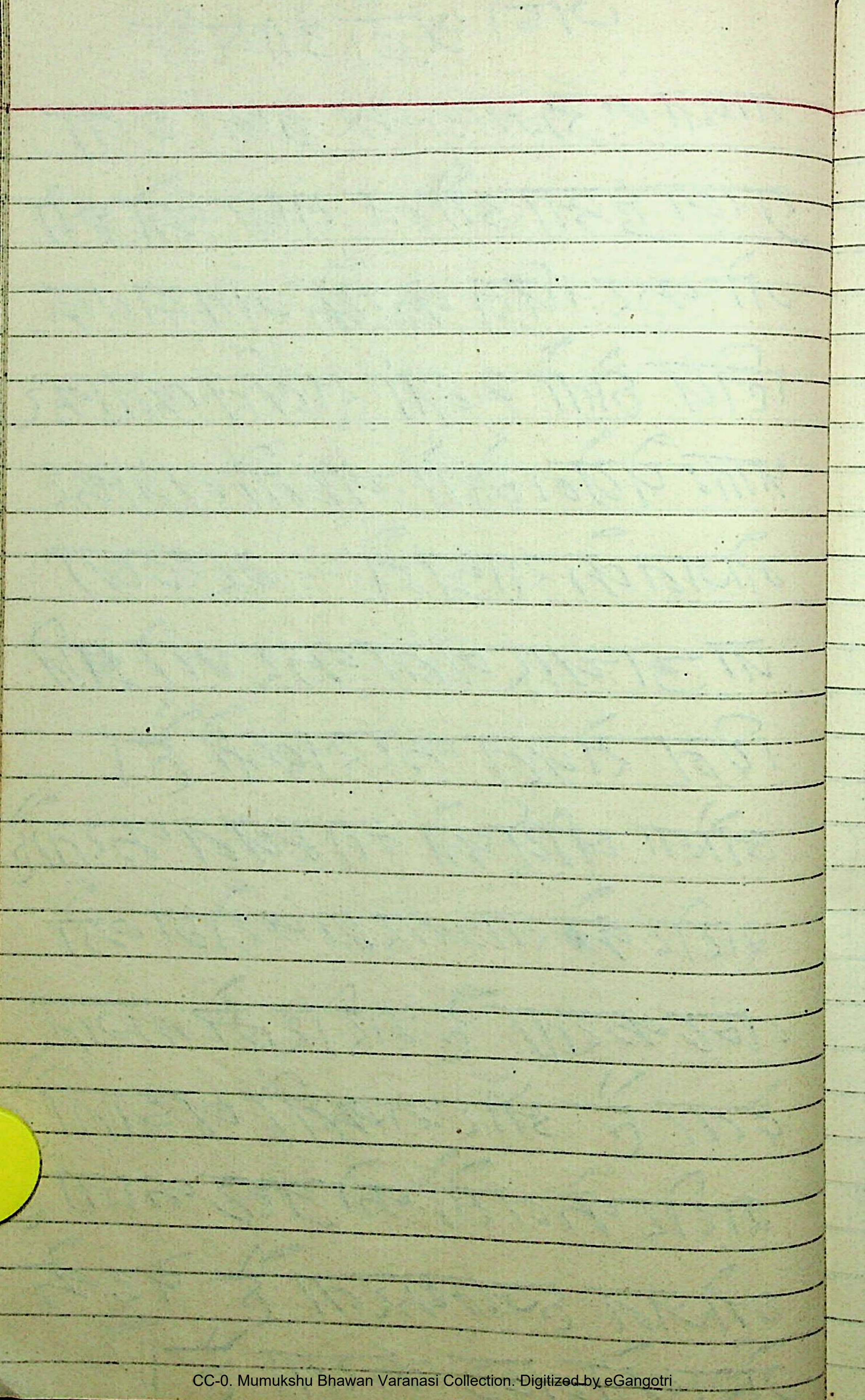
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जड़ी बूटी औषधी

साबूत में ऊँमाल कर सुका देवा। सुखा हुआ औंला साम को भी जो कर पिस करके ज्यादातर लिप होतो 2 गुना सर्बत बनाकर प्रातः पेयेन होतो चटनी बनाकर भोजन के साथ ले - मुरब्बा या अचार बना कर भी प्रती दीन सेवन कर सकते है।

औंला बीर्य को स्तमबन करता है शरीर के साधारण रोग को नष्ट करता है शरीर मे तागत देता है और शक्ती बड़ाता है शरीर के नसों को पुष्ट करता है भोजन हजम करता है पेट के गेश को नष्ट करता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



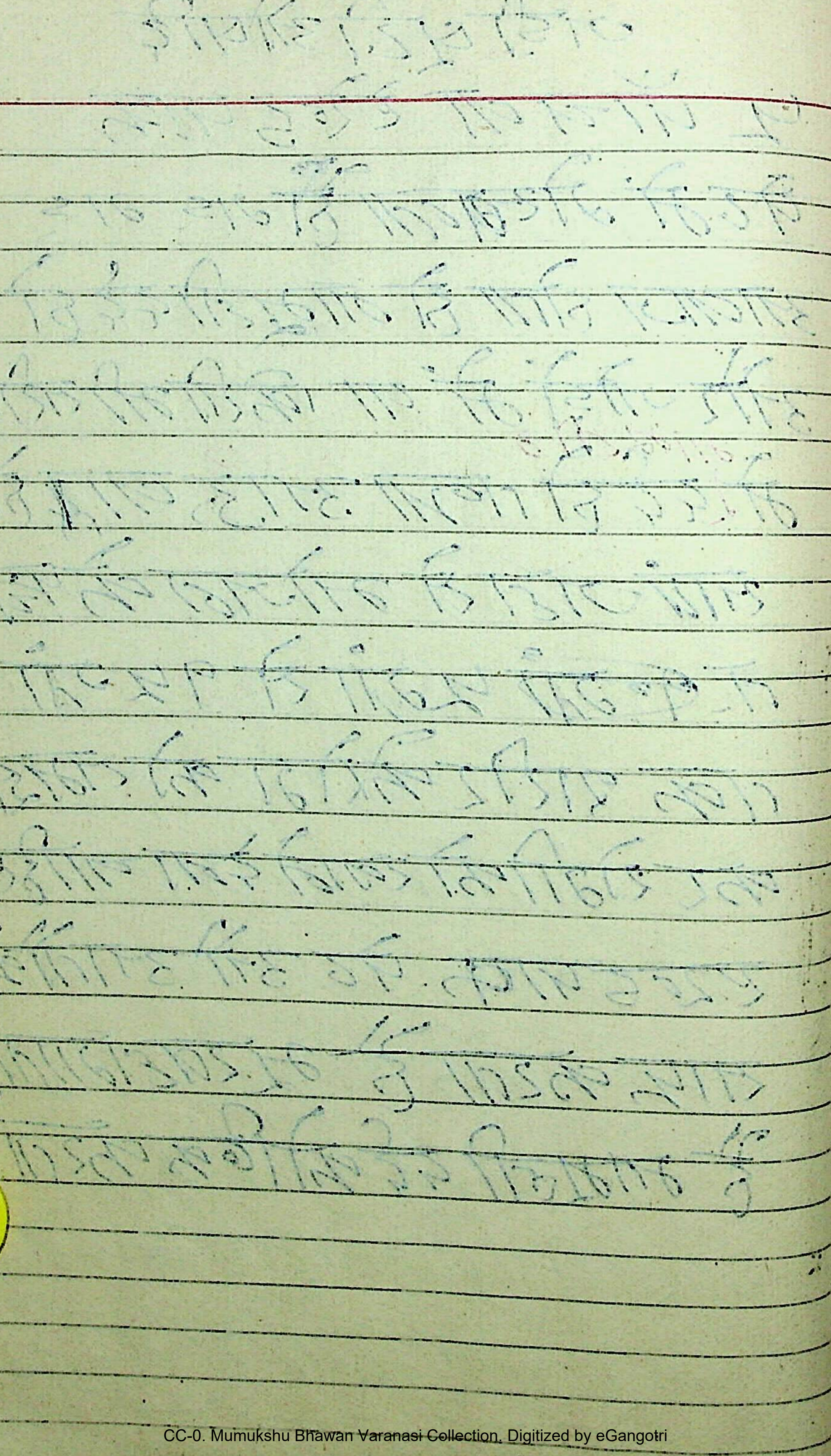
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जड़ी बूटी औषधि

५ पाँचवा एरेन्ड पाक

पेट मे गैस बनता है गड़-गड़
आवाज होता हो मामूली दर्द हो
और जोड़ों में या किसी भी सरीर
(मामूली) मे दर्द हो तथा आऊँ वात हो
सायं जहाँ से भोजन के पश्चा
त ५ ग्राँ ५ ग्राँ से १५ ग्राँ
तक शरीर के रोग को समझ
कर रोगी को खाने देना चाहिए
एरन्ड पाक पेट और आतों को
साफ करता है भूख बढ़ाता
है मामूली दर्द को ठिक करता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जड़ी बूटी औषधि

५ पाँचवा एरेन्ड पाक

पेट में गेस बनता है गड़-गड़

आवाज होता हो मामुली दर्द हो

और जोड़ों में या किसी भी शरीर
मामुली
में दर्द हो तथा आऊँ वात हो

सायं प्रात से भोजन के पश्चा

त १० ग्रां ५ ग्रां से १५ ग्रां

तक शरीर के रोग को समझ

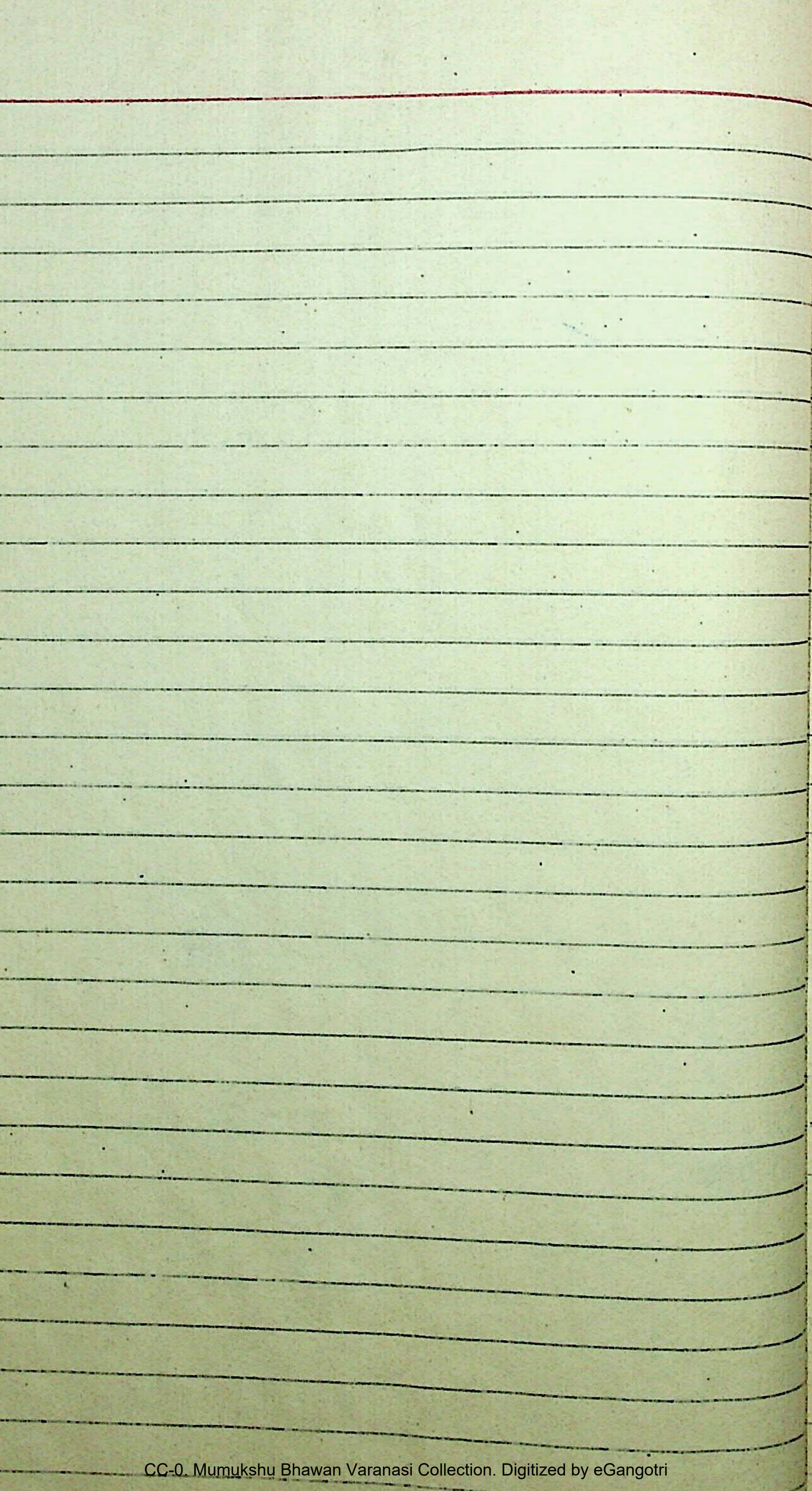
कर रोगी को खाने देना चाहिए

एरन्ड पाक पेट और आंतों को

साफ करता है भूख लगाता

है मामुली दर्द को ठिक करता है।

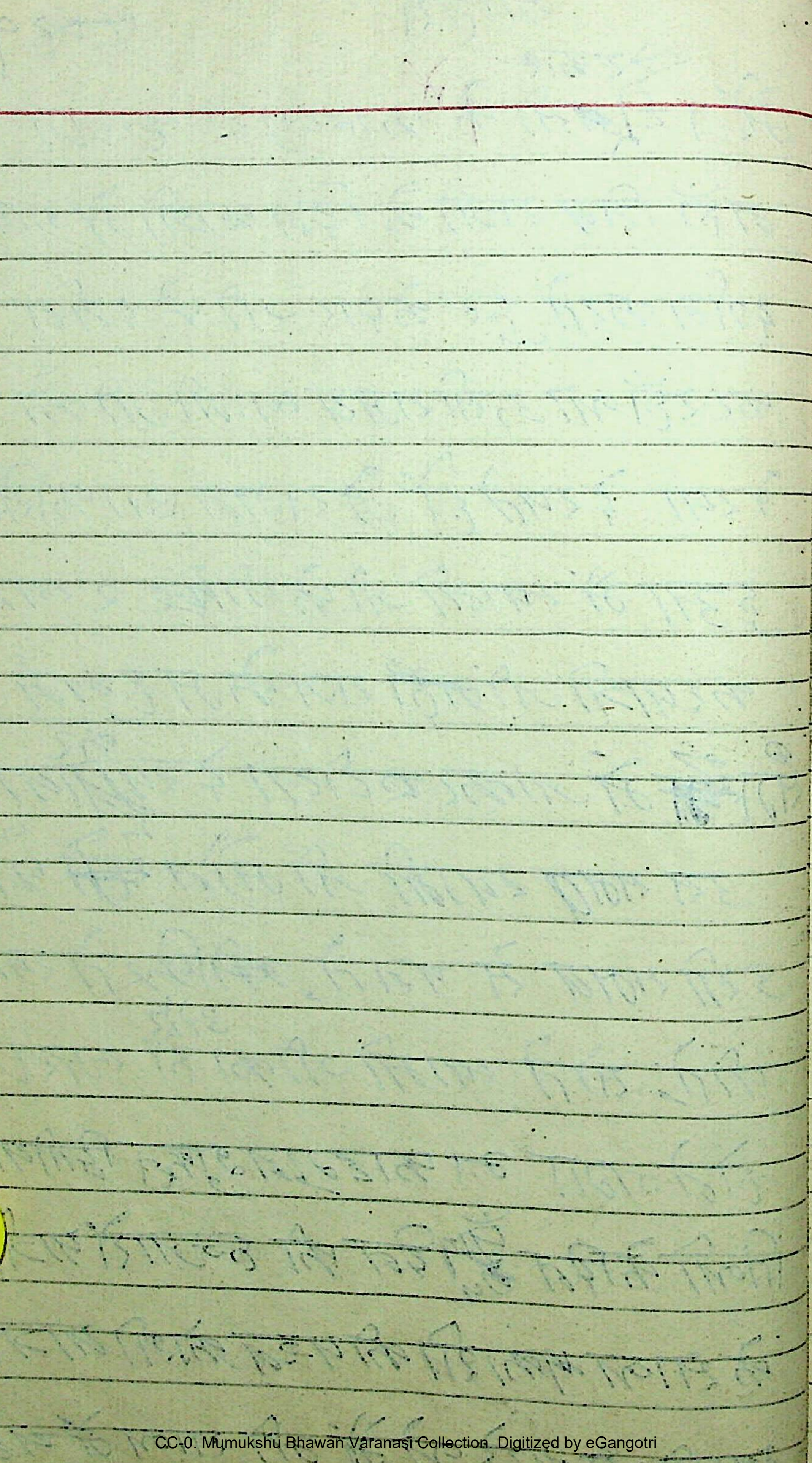
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं १९ ग्यारह सौ असी के फाल्गुन कृष्ण महाँ शिव रात्री के दिन काशी में आया दर्शन करते हुए केदार जी के दर्शन कर रहा था उसी समय स्वामी जी को देखा देखते ही मेरा मन आकर्षित हुआ मैं स्वामी जी के पीछे २ स्वामी करपात्री जी महाराज के मठ में सत्संग में जाकर कथा देखा ~~सुना~~ करा उस समय स्वामी जी मौन ~~रहते~~ थे उसी समय से पढ़ाते ~~थे~~ फिर ते खाते पीते सोते स्वामी जी का ही और स्मरण होने लगा मैं फाल्गुन शुक्ल द्वितीया तिथी के दिन ~~दूसरे~~ दिन की हजारों यात्रीयों के साथ मैं काशी की पंच कोशी यात्रा स्वामी जी गये थे मैं भी साथ में चला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

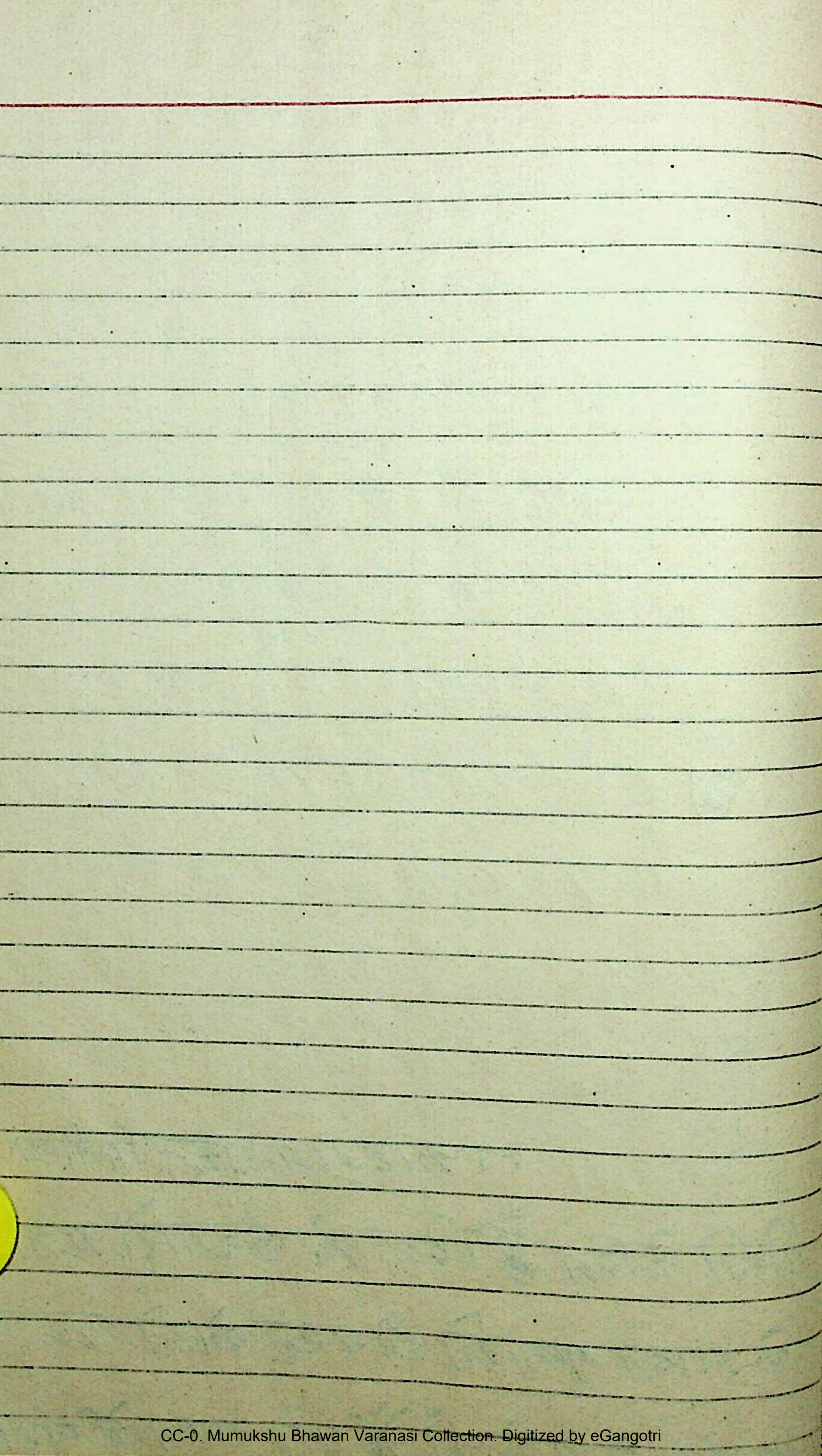
७। फाल्गुन शुक्ल द्वितीया

तिथी के दिन हमारे दल की हजारों यात्रियों

के साथ काशी की पञ्च कोशी यात्रा

धामी जी मारे गये हैं जो साथ में चहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

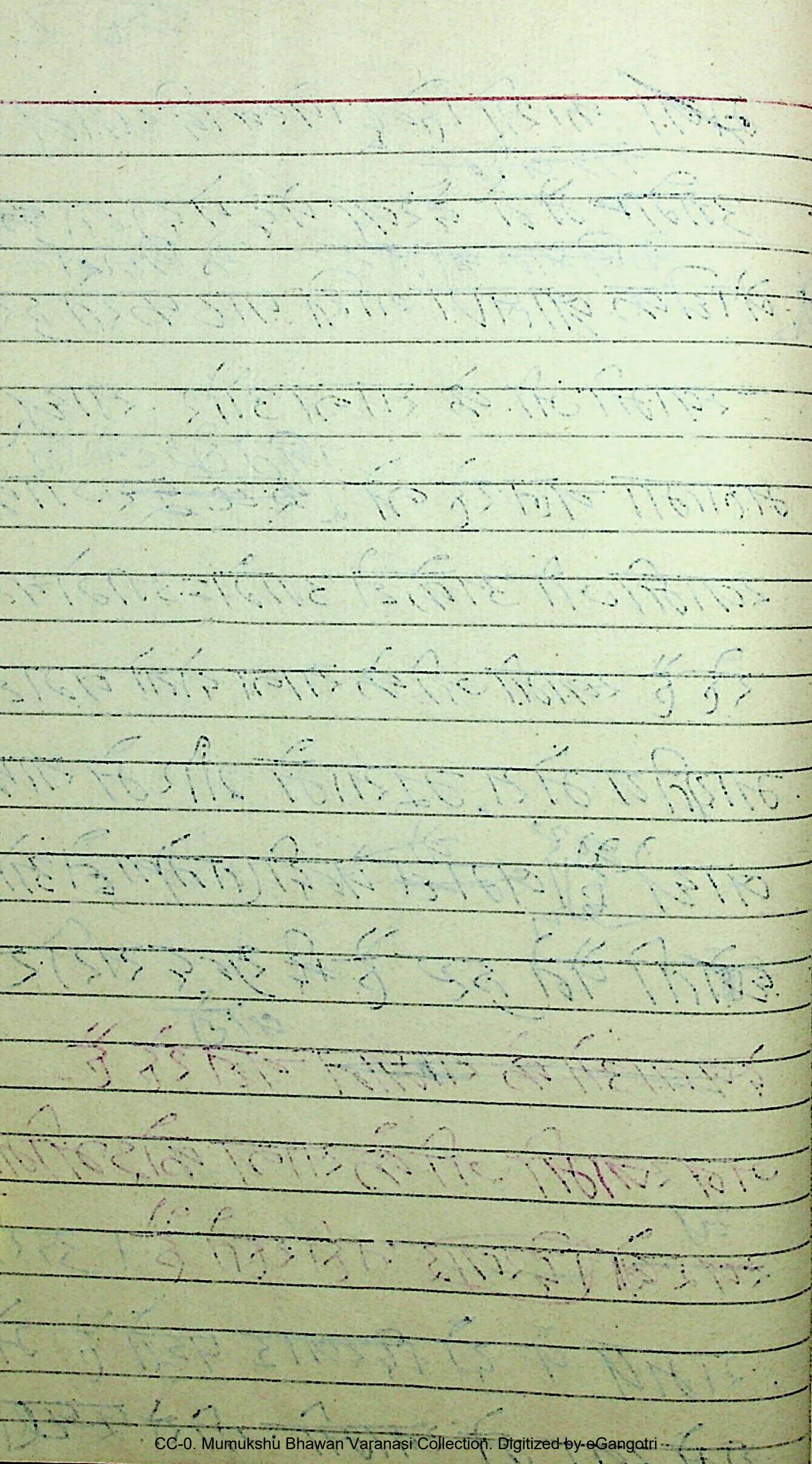


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

~~अभी~~ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से
~~पास करके~~
आगे मैंने देखा पेड़ पे ~~हाता~~
~~कोविज्ञान ब्राह्मण~~ के ~~किनारे~~
वैदिक ब्राह्मण शान्ति पाठ करते हुए

- स्वामी जी के साथ और साधु
महात्मा चल रहे थे (~~कुछ दूर~~ जाकर ~~चौराहे से~~)
स्वामी जी अकेले आगे-आगे चल
रहे है स्वामी जी के साथ दोनो बगल में
भारतीय भेस, भूसा में शीर मे साफा
बांधे ~~हुए~~ ~~बगल~~ बैन्दी (तीनो) हो और
धोती पैने हुए है ~~सुन्दर~~ सुन्दर सरीर
~~देवताओं के समान~~ वाले चलते रहे है।
जब स्वामी जी के साथ कोई भी मनु
~~स्वस्थ~~ स्य (~~दिखाई~~) नहीं रहते है। उसी
समय पे दो दिखाई पड़ते है मैंने
शमे ~~रवा~~ मैं स्वामी जी से पूछा।

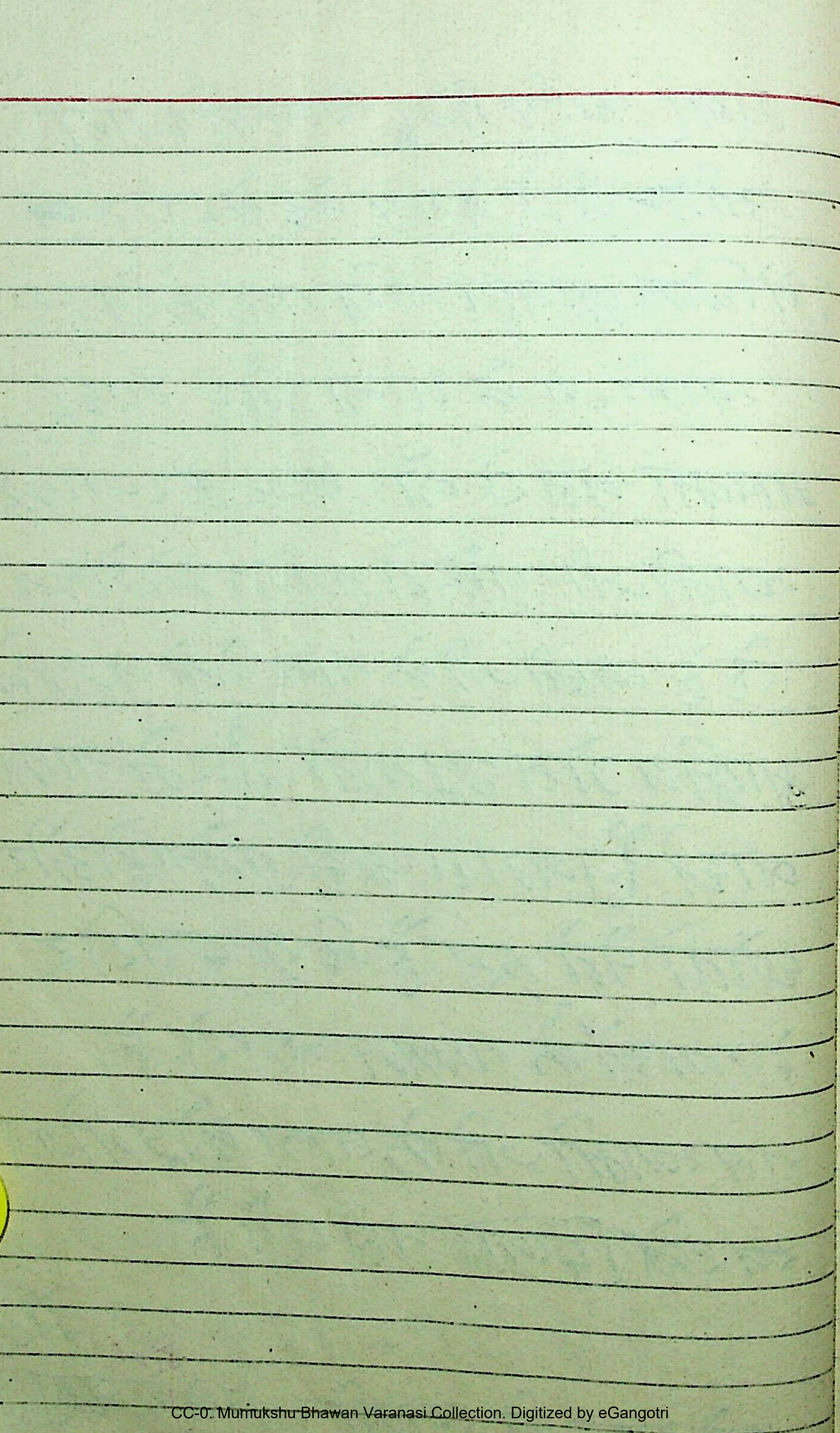
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
आगे मैने देखा पेड़ पे दान्त
वैधिक ब्राह्मण शान्ति पाठ करते हुए
स्वामी जी के साथ और साधू
महात्मा चल रहे थे कुछ दूर जाकर
स्वामी जी अकेले आगे-आगे चल
रहे है स्वामी जी के साथ दोनो बगल मे
भारतीय भेस भूसा मे शीर मे साफा
बाधे है बगल बन्दी जैकेट है और
धोती पैने हुए है शुद्ध सरीर
देवताओं के सामान चल रहे है
जब स्वामी जी के साथ कोई भी व्यक्ति
स्पष्ट (दिखाई) नही रहते है
मैंने मैने
सपने मे स्वामी जी से पूछा

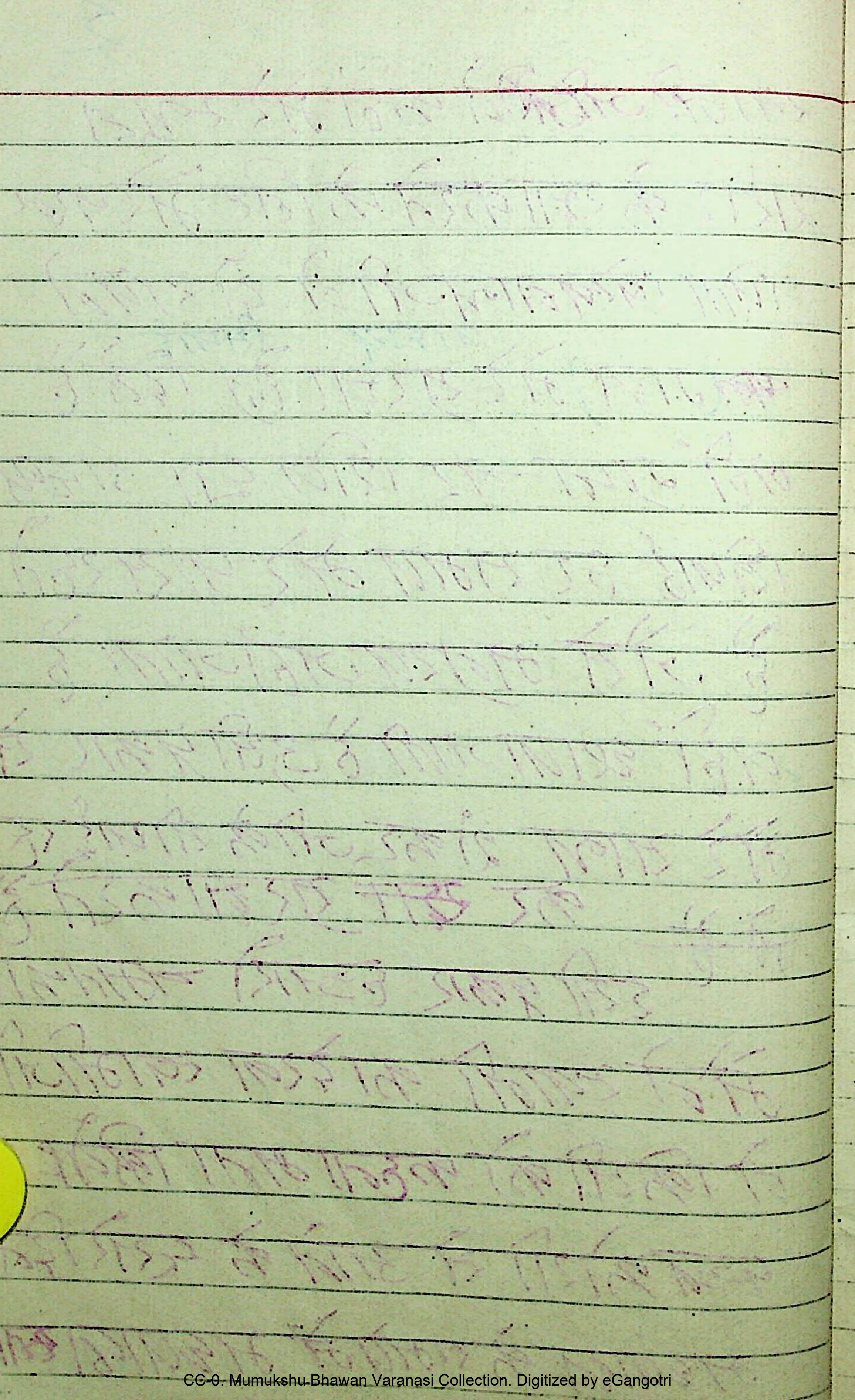
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



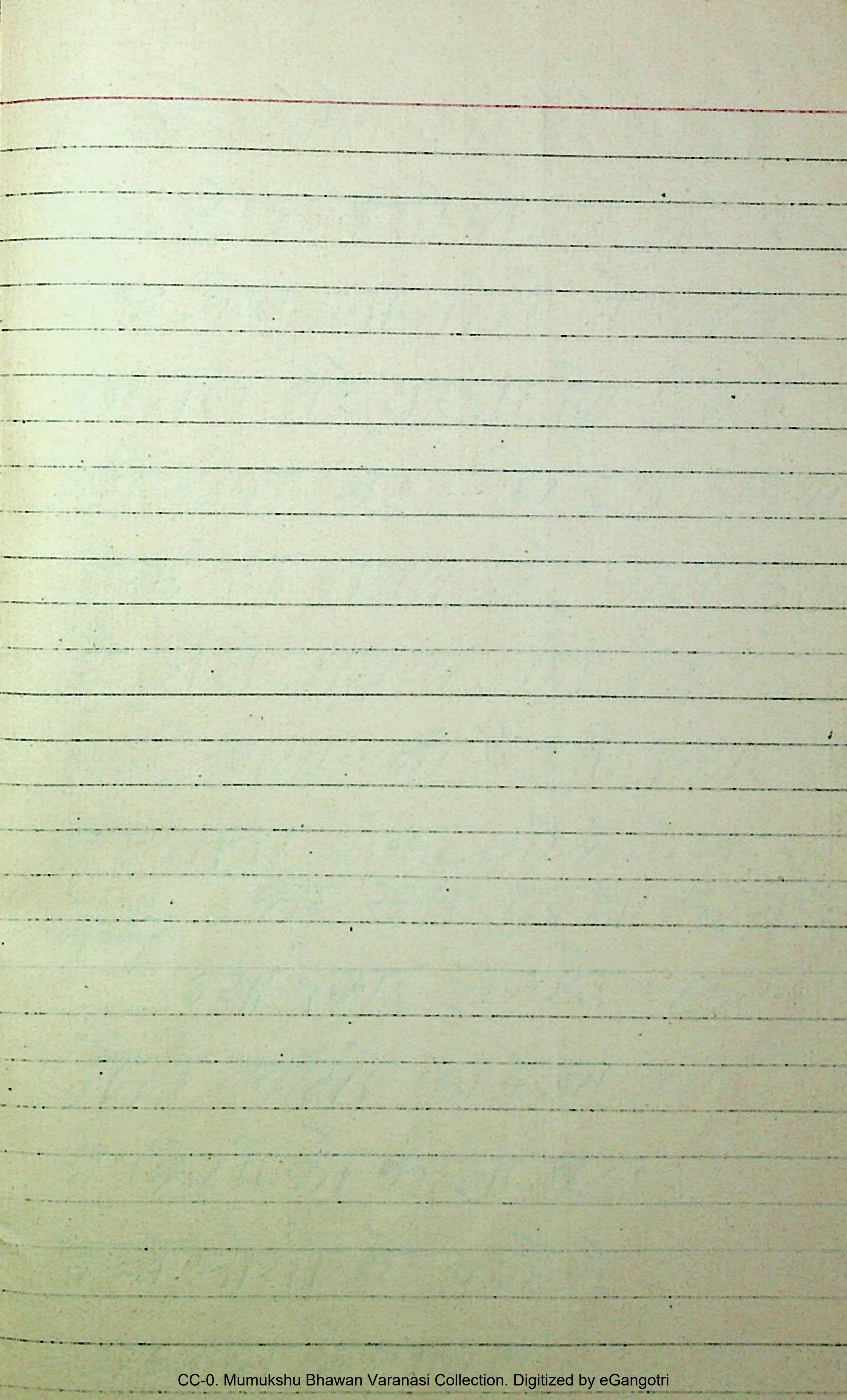
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वामी जीने कहाँ मेरे स्थूल
शरीर के रक्षा करने के लिए मेरे परम
पिता विश्वनाथ जी ने दो अपने
(गण) अदृश्य मेरे सुरक्षा हेतु सिपाई दिये है
वही गुप्त चर शिव दूत अदृश्य
सिपाई हर समय मेरे पास रहते
है जैसे मनुष्य जहाँ जाता है
वहीं छाया जाती है उसी प्रकार से
मेरे साथ शंकर जी के सीपाई रह
~~रहे है~~ कर रक्षा सुरक्षा करते है
इसी प्रकार हजारो चमतकार
मैने स्वामी का देखा स्वामीजी
ने किसी को कहना मना किये
पञ्चकोशी से आने के दूसरे दिन
मध्याह्न के समय में मध्याह्न स्ना।

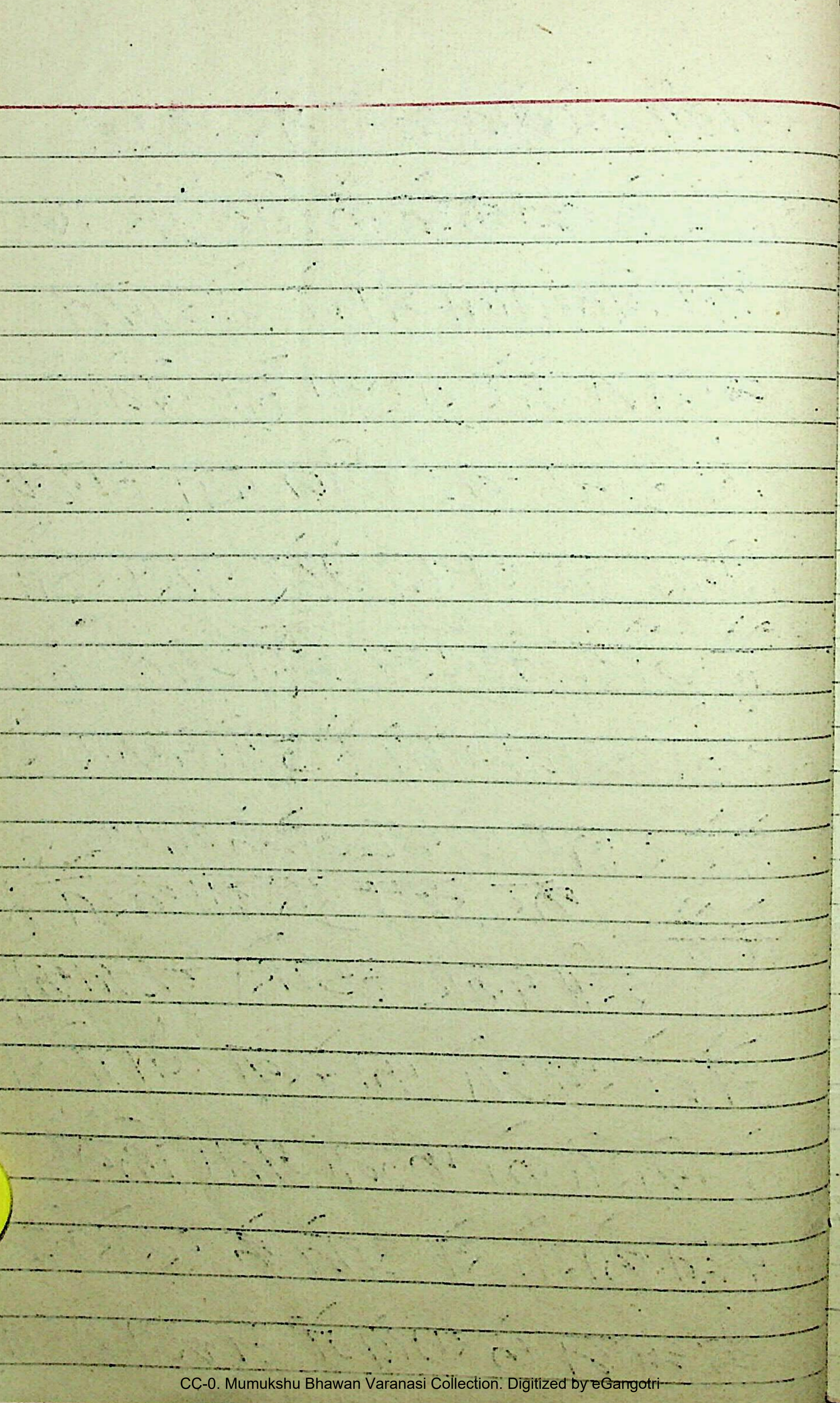
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वामी जी बोले कहाँ मेरे स्थूल

शरीर के रक्षा करने के लिए मेरे परम

पिता विश्वनाथ जी ने दो ब्राह्मण

वर्णन मेरे रक्षा हेतु दिये है

वही ब्राह्मण वर शील का अद्भुत

सिपाई हर समय मेरे पास रहते

है जैसे मनुष्य जहाँ जाता है

वहीं छाया जाती है इसी प्रकार से

मेरे साथ शंकर जी के सीपाई रह

ते है और सदा रक्षा करते है

इसी प्रकार हजारो चमत्कार

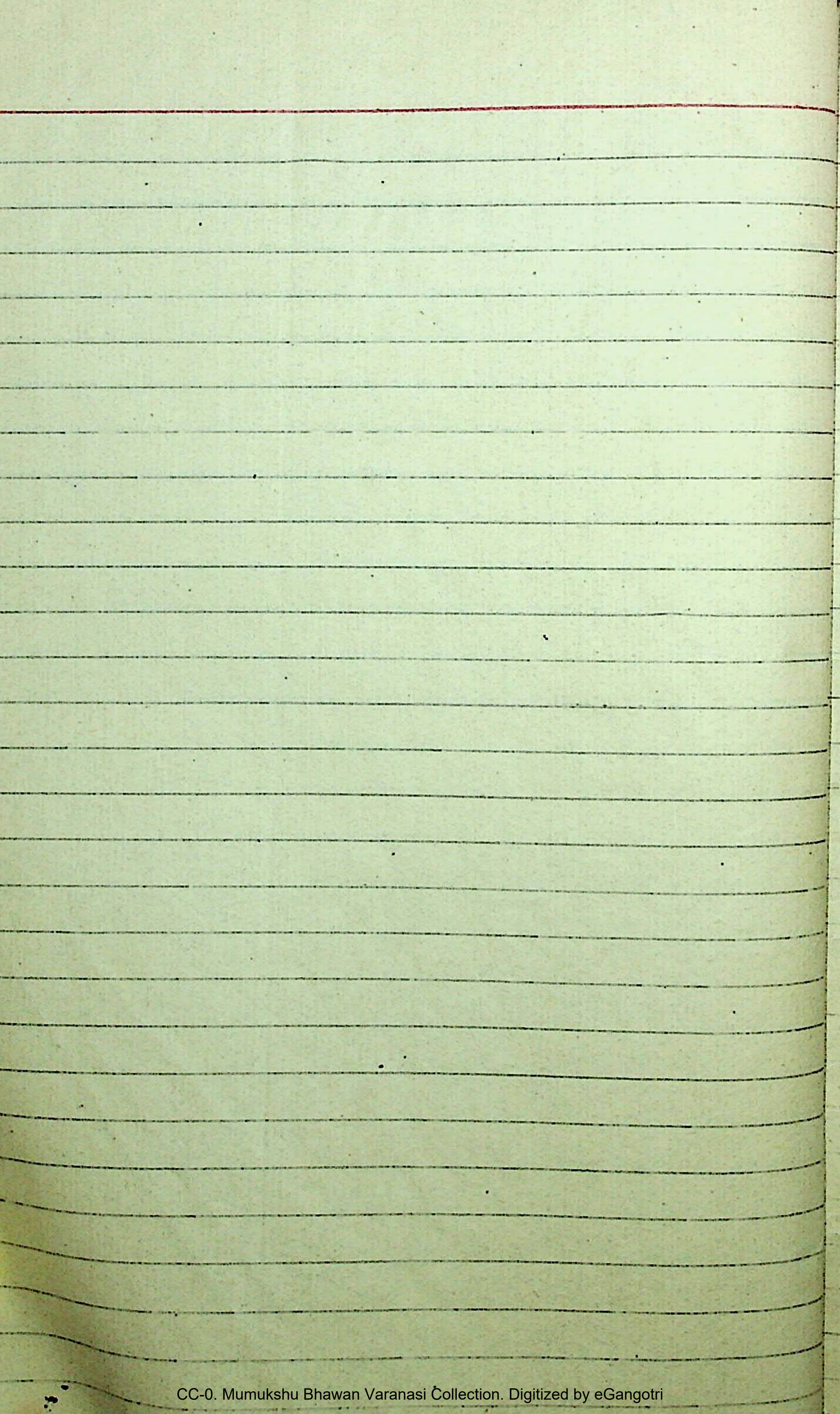
मैने स्वामी का देखा स्वामीजी

ने किसी को कहना मना किये

पञ्चकोशी से आने के दूसरे दिन

मध्यान के समय में मध्याह्न स्नान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने को। हीद   ५८७४

प्रह्लाद घाट पर ~~कर रहे थे~~ स्नान

कर रहे थे अकेला ही गङ्गाजी को

तैर कर उस पार जा रहे थे

थोड़े ही दूर जाते ही दो आदमी,

स्वामी जी के दोनो बगल मे तैरने लगे

उस पार जाकर बालू मे स्वामी

जी के पास बैठे पुनः गङ्गा जी

मे तैरते हुए कीनारे तक आये

कितारे आते हीं अदृश्य होगये मैं उतसी

पार के ~~स~~ सी. ढी मे बैठकर देख यह दृश्य

देख रहा था मैने स्वामी जी से पूजा

(स्वामी जी बोले)

स्वामी जी आप के साथ कौन थे यह

विश्वनाथ जी के अदृश्य सिपाइ है आप

बहुत भाग्य मान है दर्शन पाये किसी

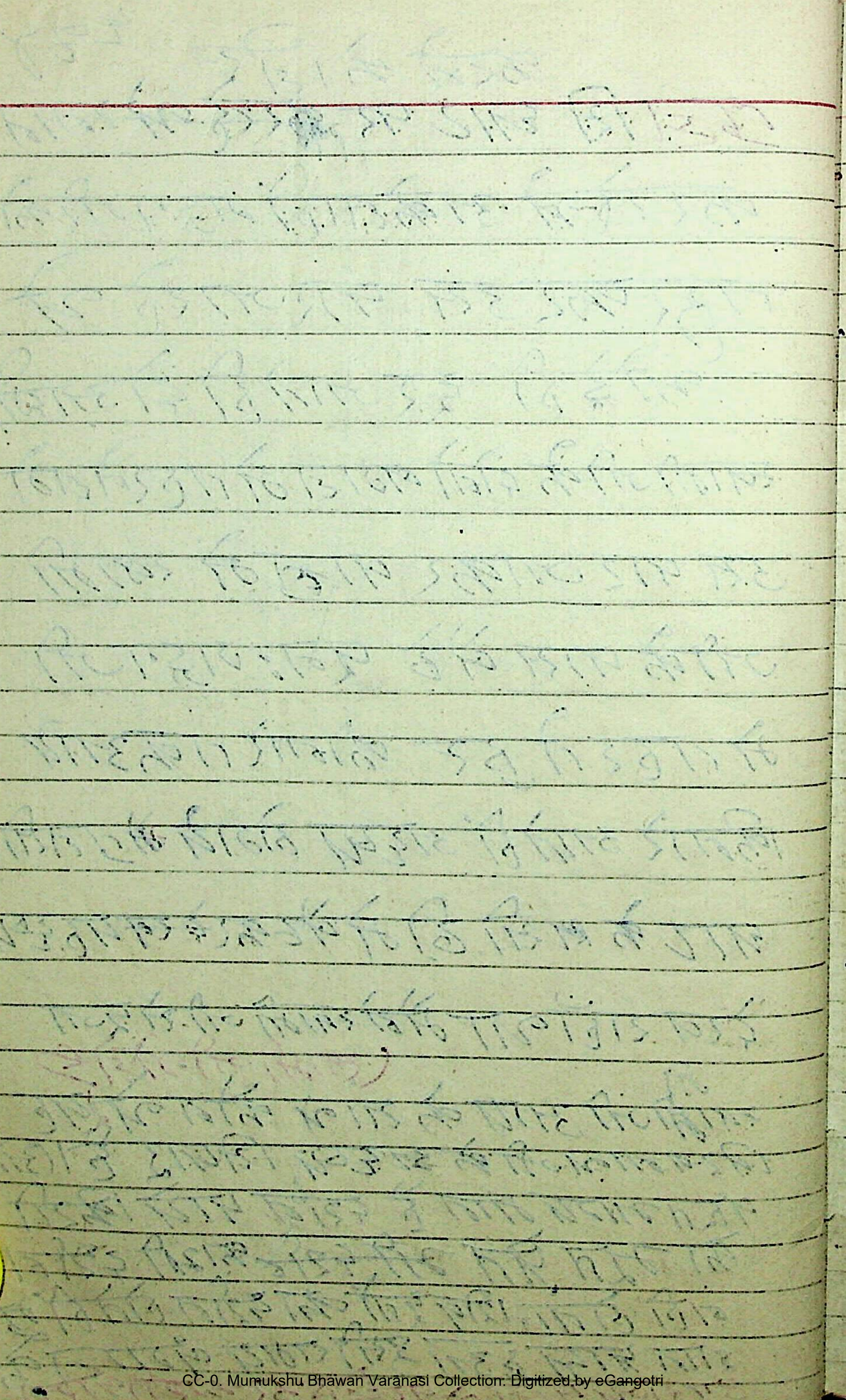
का भूत प्रेत भी ~~दर्श~~ काशी दर्शन

नही होता, शिव दूतों का दर्शन होते ही मुक्ति

ज्ञान प्राप्त हुआ ऐसी समय बंगाल के

उपराज्यपाल ने पद छोड़कर काशी [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ह्रासि घाट पर ~~रहे~~ रहे थे स्नान
कर रहे थे अकेला ही गङ्गाजी को
पार कर उस पार जा रहे थे
थोड़ी दूर जाते ही दो स्वामी
स्वामीजी के दोनों बगल में राह रहने लगे
उस पार जाकर बालू में स्वामी
जी के पास बैठे फिर गङ्गाजी
तैरते हुए किनारे तक आये
किनारे आते ही अदृश्य हो गये मैं इतनी
घाट के पास ही में बैठकर देख रहा
देख रहा था मैंने स्वामी जी से पूछा
स्वामीजी आपके साथ कौन थे वे
विश्वनाथजी के अदृश्य दिखाई हैं आप
पतित भावन मान हैं दर्शन पाये किसी
को भूत प्रेत भी ~~दर्शन~~ कभी दर्शन
नहीं होता, शिव दूतों का दर्शन होते ही मुझे
ज्ञान प्राप्त हुआ इसी समय बंगाल के
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते होगा स्वामी जी का मैंने

~~अनगिनत चमत्कार देखा~~।

स्वामी जी की और एक विशेषता

यह है स्टेशन में सड़क में गाड़ी मे

और

में गंगा जी के किनारे (तट) घाट

एवं मठ, मन्दिर तथा घर मे

जहाँ कहीं भी रोगी दिखाई पड़े

या पता लगे अपने आदमियों

को भेज कर टैम्पू, रिक्शा कर

के काशी के सभी अस्पताल

में भेज देते थे स्वामी जी का नाम

सुनते ही तत्पश्चात् अस्पताल में ~~भी~~

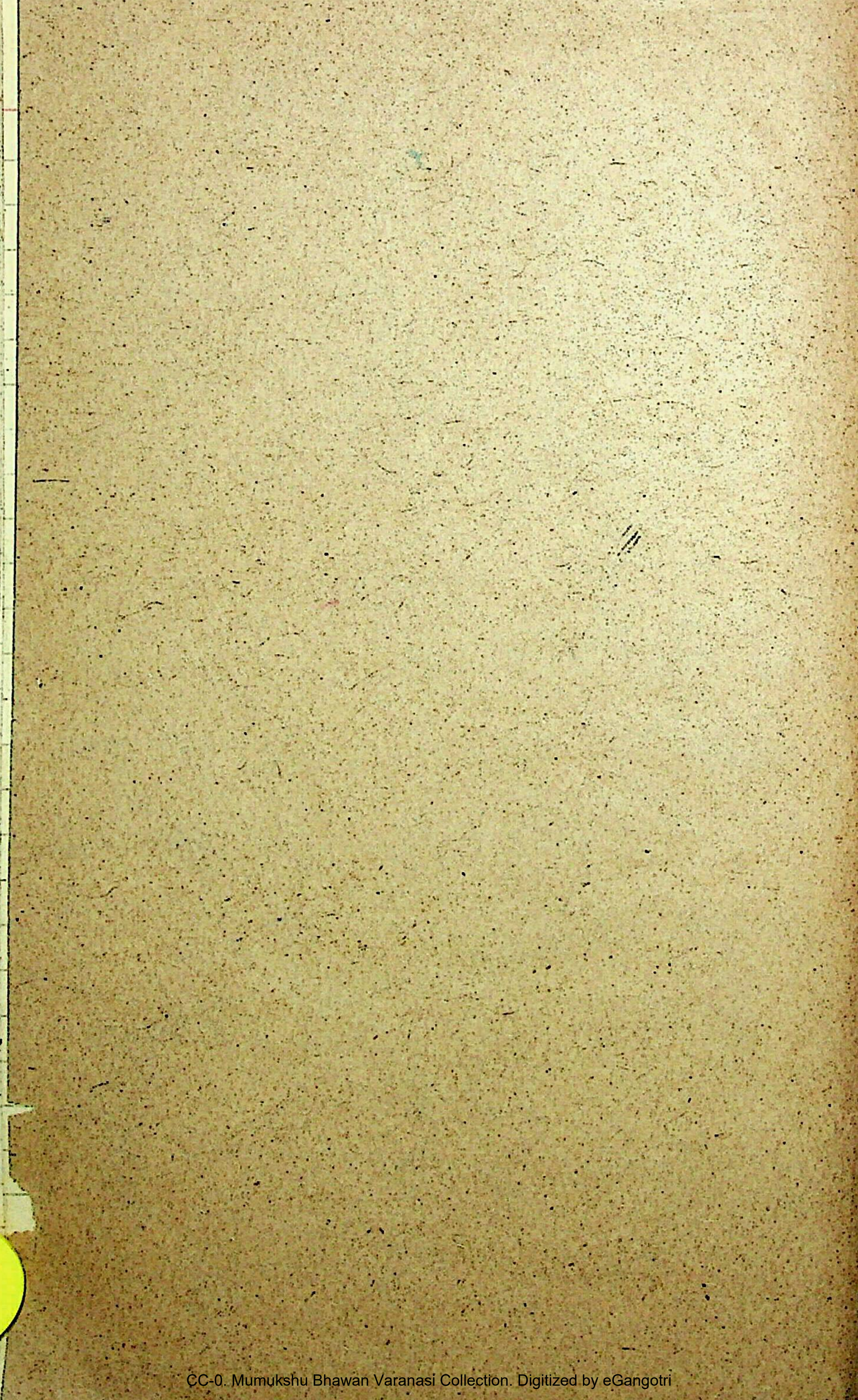
~~निःशुल्क भी स्थान के~~

भर्ती करते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri